हिन्दुस्थान का स्वातंत्र्य संघर्ष...



हिन्दुस्थानके स्वातंत्र्य-संग्रामका सजीव इतिहास
दाहर-पतनसे लेकर महात्मा गांधी-निधन तक १२५ भागोंमें

राजस्थानी वीरोंका संघर्ष

वीर हम्मीर

(ऐतिहासिक नाटक)

लेखक :—
श्री शिवप्रसाद 'चारण' एम. ए.

"Our immediate past must be studied with accuracy of detail as to facts and penetrating analysis as to causes if we wish to find out the true solutions of the problems of modern India and avoid the pit falls of the past. The light of our father's experience is indispensably necessary for guiding aright the steps of those who would rule the destinies of our people in the present."

—*Sir Jadunath Sarkar*

प्राप्तिस्थान—
महर्षि मालवीय इतिहास परिषद्
उपासना मंदिर दुगड्डा (गढ़वाल)

हिन्दुस्थानके स्वातंत्र्य-संघर्षका सजीव इतिहास

दाहर-पतनसे लेकर महात्मा गांधी-निधन तक

१२५ भागोंमें



पिछले सवा बारह सौ वर्षोंमें हिन्दुस्थानके स्वातंत्र्य, सभ्यता और संस्कृतिकी रक्षाकेलिए अनेक दारुण यंत्रणाएं सहतेहुएभी निरंतर संघर्ष करनेवाले वीरोंकी गौरव-गाथाओं, विशेषताओ और त्रुटियोंका नाटक, उपन्यास, कहानी, महाकाव्य आदिकी शैलीपर सजीव वर्णन।



विषय-विभाजन

प्रथम संघर्ष युग—दाहर-पतनसे लेकर पृथ्वीराज-पतन तक

द्वितीय संघर्ष युग—कुतुबुद्दीनके राज्यारोहणसे पलासीयुद्धतक

(अ) राजस्थानी वीरोंका संघर्ष

(आ) बुन्देलखंडी वीरोंका संघर्ष

(इ) जाट वीरोंका संघर्ष

(ई) महाराष्ट्री वीरोंका संघर्ष

(उ) पंजाबी वीरोंका संघर्ष

(ऊ) दाक्षिणात्य वीरोंका संघर्ष

(ए) विभिन्न वीरोंका संघर्ष

(ऐ) महात्माओंका संघर्ष-संगीत

तृतीय संघर्ष युग—सिराजुद्दौला-वधसे लेकर महात्मा गांधी-निधन तक

देशभक्ति, वीरत्व और राष्ट्रीयतासे भरपूर ओजस्वी साहित्य

श्री गणेशायनमः

वीर हम्मीर

ऐतिहासिक नाटक

लेखक—श्री शिवप्रसाद

पात्र-परिचय

महात्मा मोहनदास—त्यागी महात्मा।

वीर हम्मीर—रणथंभोर-नरेश

भोज—वीर हम्मीरका यमल भ्राता

प्रीतम, वीरम—वीर हम्मीर के छोटे भ्राता

रतिपाल, रणमल्ल—रणथंभोरके सेनानायक

भीमसिंह—भोज का पुत्र

बाण—रणथंभोरका चारण

अल्लाउद्दीन—दिल्ली का खिलजी बादशाह

उलूगखाँ, नुसरतखाँ,
मीर मुहम्मद रफीक मुहम्मद
मलिक इज्जुद्दीन } खिलजी सेनानायक

अमीर खुसरो—दिल्ली दरबारका कवि

मलिक अलाउलमुल्क—दिल्ली दरबारका अमीर

दुर्गावती—रणथंभोरकी महारानी

माया—प्रीतमकी पत्नी

बीणा—भोज की पत्नी

नूरजहाँ—मीरमुहम्मद की पत्नी

हुसैना—अलाउद्दीन की बहिन।

मंत्री, दरबारी, काजी, कोतवाल, प्रहरी, दूत, जासूस, गड़रिया, मद्यप, थानेदार, नागरिक आदि

वीर हम्मीर

अंक १

दृश्य—१

स्थान—-रणथंभोर–दरबार-भवन

(एकाकी रतिपाल)

रतिपाल—नहीं, न ब्रह्माका सृजन, न विष्णुका संरक्षण! रतिपाल आयाहै शंकरके संहारका अभिनय करने! फूलती-फलती बाटिकामें दुबककर अग्नि धधकाना और सकना रतिपालका आनन्द है। सुखी, सन्तोषी परिवारपर चुपकेसे कलह-कुठार मार देना रतिपालका मनोरंजन है! पति और पत्नीके, पिता और पुत्रके, और भ्राता और भ्राताके मध्य फैलेहुए प्रेमजालको गुप्त मंत्रणाकी कर्त्तरीसे कुतरकर उन्हें एक दूसरेके रुधिरका पिपासु बनादेना रतिपालका जीवन-लक्ष्य है!

(एक सेवकका प्रवेश और सिंहासनको वस्त्रसे झाड़कर गमन)

रतिपाल—राजतिलकको निर्वासनमें परिणित करदेनेवाली मन्थरा, आओ, रतिपालकी जिह्वापर निवासकरो। ज्येष्ट भ्राताके राज्य और भ्रातृजायाको आत्मसात् करनेकलिए शत्रुसे मिलजाने वाले सुग्रीव और विभीषण आओ, रतिपालके नेत्रकोटरोंमें प्रविष्ट होकर उसे मार्ग दिखलाओ, नन्दवंशको उलटकर शूद्रा पुत्रको सिंहासनपर प्रतिष्ठित करानेवाले कुटिल कौटिल्य, आओ, रतिपालके मस्तिष्कपर आसन ग्रहणकरो। संसारभरके छलियो, देशद्रोहियो और विश्वासघातको, आओ, रतिपालके हृदयमें बैठकर उसकी नरलीलाका संचालन करो।

(भोज और प्रीतमका प्रवेश)

प्रीतम—(सिंहासनको सजातेहुए) भोज, हम्मीर और वीरम राम-लक्ष्मणकी भांति दक्षिणपथपर अपनी विजय-पताका लहरा कर आज रणथंभोर लौटरहेहैं। और हम दोनों—भोज और प्रीतम, भरत-शत्रुघ्नकी भांति उनकी प्रतीक्षामें उत्सुक सिंहासनको सज्जित कररहेहैं।

भोज—प्रीतम, वीर हम्मीरकी अभिलाषा है कि राजस्थान और दक्षिणपथके समस्त हिन्दुराज्योंको संगठन-सूत्रमें सज्जितकर के उत्तरपथपर आक्रमण कियाजाए और मातृभूमिसे यवन-कलंकको मिटाकर हिन्दुस्थानमें एकछत्र सुदृढ़ साम्राज्यकी स्थापना कीजाए!

रतिपाल—(सन्मुख आकर) सम्राटकी जय हो!

भोज—रतिपाल, 'सम्राटकी जय' सम्राटके शुभागमनके समय कहना।

रतिपाल—भोज, क्षमाकरना, तुम रूप, रंग और आकारमें पूर्णत: सम्राटके समान दिखाईदेतेहो। यदि तुम स्वर्णकिरीट धारणकरके इस सिंहासनपर विराजो तो सब तुम्हें सम्राट हम्मीरही समझेंगे।

भोज—रतिपाल, सम्राटका और मेरा जन्म माताके उदरसे एकसाथ ही हुआहै। सम्राट मुझसे केवल आधेपल जेष्ठ हैं। रूप, रंग और आकारमें सर्वथा अभिन्न होनेके कारण कई नवागन्तुक हमें पहचाननेमें भ्रम करतेहैं और सम्राटको केवल स्वर्णकिरीट द्वाराही पहचान पातेहैं।

रतिपाल—इसीसे तो, भोज, मैं कहताहूँ कि यदि तुम स्वर्ण-किरीट धारणकरके इस सिंहासनपर विराजो, तो दर्शक तुम्हे साक्षात् सम्राट ही समझेंगे।

भोज–रतिपाल, हमारे वंशमें सिंहासनपर बैठनेका अधिकारी केवल जेष्ट भ्राता होताहै। मुझे भगवानने कनिष्ट बनायाहै।

रतिपाल–भगवानने नहीं, तुम्हारी माताने। एक साथ ही जन्म लेनेसे और समान रूप, रंग और आकारका होनेके कारण कौन कहसकताहै कि तुम्हें कनिष्ट कहनेमें तुम्हारी माताने भ्रम न खायाहो ?

भोज–होसकता है।

रतिपाल–और यदि तुम्हें आधे पलसे कनिष्ट न बतलायागया होता तो तुम्हारा इस सिंहासन और स्वर्णकिरीटपर वही अधिकार होता जो आज हम्मीरका है।

भोज—निस्सन्देह। केवल आधे पलकी कनिष्टताने मुझे रणथंभोरके इस राजसिंहासनसे च्युतकरके, जिसपर आरूढ़ होनेका मुझे पूर्ण अधिकार था, आज मुझे उसी सिंहासनके सम्मुख मूक करबद्ध सेवककी भांति खड़ारहने योग्य बनादियाहै।

(घोषणाकरनेवालेका ढोल बजातेहुए प्रवेश)

घोषणा क०–श्री महाराजाधिराज श्रीश्री परमभट्टारक श्री दिग्विजयी रणथंभोर-सम्राट श्रीश्री एकसौआठ वीर हम्मीर आज…

रतिपाल–चिरकालसे सात लोक चौदह भुवनोंका शासक होनेपर भी बेचारे विष्णुको एकही श्रीकी प्राप्तिहोसकीहै पर हमारे रणथंभोर सम्राटके पीछे एकसौ तेरह श्री फिरतीहैं। भोज, यदि तुम रणथंभोर सम्राट होते तो तुम्हारे पीछे………

घोषण क०–श्रीश्री १०८ वीरहम्मीर आज सरसपुर, गढ़मंडल उज्जैन, मेवाड़, मालवा, शाकम्भरी, मानधाता, खण्डेल और चंपानरेशोंको पराजितकरके समस्त दक्षिणपथपर विजयपताका फहराकर, तथा ६ नौसौ ऊंटोंपर रत्नाभूषण और कर-द्रव्य लेकर रणथंभोर लौटरहेहैं। समस्त सामन्तगण, नगररक्षक, राष्ट्रपरिषद

के सभासद और श्रेष्ठिजन उनका स्वागत करनेकेलिए दिग्विजय-द्वारपर उपस्थित होनेका कष्ट करें । (प्रस्थान)

रतिपाल—चलिए नगररक्षक भोजराज और सामंतशिरोमणि प्रीतमजी चलिए ।

भोज—रतिपाल, तुमजाओ, हमलोग वस्त्र परिवर्तन करके शीघ्र आते हैं । (रतिपालका प्रस्थान)

भोज—प्रीतम,हम्मीरके सौभाग्य सूर्यके उदयपर हम दोनों प्रात:कालीन ताराओंकी भाँति निस्तेज और प्रभाहीन होबैठेहैं । अब हमारे लिए लुप्तहोजानाही श्रेयस्कर है ।

प्रीतम—नहीं, भोज, इतने उदासीन होनेकी क्या बात है ? हम्मीरके राज्यमें भी तुम्हें सुख-सम्पदाकी प्राप्ति होसकतीहै ।

भोज—नगररक्षक कोतवाल बनकर भी सम्पदाकी प्राप्ति ? अर्थमंत्री मुझपर शंका करके, तीनबार बड़ी उद्धतता पूर्वक मुझे नगरकी आयकाहिसाब देनेकेलिए कहचुका है । यदि वह मुझे भी भद्रपुरुष समझकर बिना किसी शंकाके हिसाब माँगता तो उसे देनाहीथा । किन्तु उसकी उद्धतता मेरी सहनशक्तिको विचलित करदेतीहै । विशेषकर जब मुझे यह ध्यान आता है कि यदि मैं आधेपलसे कनिष्ठ न मानागयाहोता तो यह क्षुद्र अर्थमंत्री मेरा दास होता ।

प्रीतम—भोज, नगरकी आयका हिसाब चुकादेनाही उचितहै ।

भोज—हम्मीर नौ नरेशों और अनेकों सामन्तोंको पराजित करके नौसौ ऊंटोंपर करद्रव्य लारहाहै । यदि एक नगरकी एक वर्ष की आयको भोज ही रखले तो कौनसा अन्याय है ?

प्रीतम—हमने बातोंमेंही समय बितादिया । सम्राट सन्निकट ही आगएहैं । बाजे बजरहेहैं एक पार्श्वमें खड़ेहोजाओ । पुष्पहार संभाललो ।

(नेपथ्यसे—सम्राट वीर हम्मीरकी जय !)

[सभासद, श्रेष्ठिजन और सामन्तोंके साथ हम्मीरका प्रवेश। हम्मीर सिंहासन पर बैठता है। सभासद और प्रीतम हम्मीरको पुष्पहार पहनाते हैं। जब भोज हार पहनानेकेलिए हम्मीरपर दृष्टि डालताहै तो उसके हाथसे हार गिरजाताहै।]

समस्त सभासद—सम्राट वीर हम्मीरकी जय।

ब्राह्मण—जय हिन्दू कुल-श्रेष्ठ वीर हम्मीर धीरधर।
शत्रु-सैन्य-संहार करण रण-निपुण तीव्रतर॥
म्लेच्छ-घन-घटा-हरण-समीरण, तीव्र तीरधर।
दैन्य-दस्यु-दल-दलन; वचन-धन, जय अभीत कर॥
दुष्ट-दन्ति अतिचण्ड दण्ड ले खण्डखण्ड-कर।
तिमिर-तोम-हर, स्वच्छ व्योम-कर रवि प्रचण्ड खर॥
जय दक्षिण-सम्राट, दक्ष अति, एक छत्रधर।
देश-धर्म-स्वातंत्र्य-हेतु संगठन-मन्त्रधर॥
जय आरत भारत-सपूत, जय जयति जयति जय।
रणथंभोर-नरेश, देश-रक्षक; जनेश जय॥

समस्त सभासद—वीर हम्मीरकी जय!

हम्मीर—आज यवनों के अत्याचारोंके तले भारतभूमि करहा रहीहै। समस्त उत्तरपथमें हिन्दुजाति यवनोंके दमन-चक्रसे उत्पीड़ित है। और अब राजस्थान और दक्षिणपथकी ओर भी यवन महामारी तीव्र वेगसे बढ़तीचलीआरहीहै। यदि हिन्दु-जाति और हिन्दु संस्कृतिने जीवित रहनाहै तो आपसके मनो-मालिन्य और गृहकलहको मिटाकर सबको संगठित होनाहोगा और अपने देश और धर्मकी स्वतंत्रताकेलिए प्राण भी देदेनेको प्रस्तुत रहनाहोगा।

समस्त सभासद—अवश्य।

हम्मीर—समस्त राजस्थान और दक्षिण पथ के नरेशों और सामन्तोंने हिन्दूध्वजके नीचे संगठित होनेका व्रत लियाहै और रणथंभोरको बीस करोड़ मुद्रा कर-स्वरूप प्रदानकियाहै । अर्थमंत्री इस द्रव्यको महाबलाध्यक्षसे लेकर कोष में संभालकर रखदो । यह समस्त द्रव्य और राज कोष-का पिछला धन, सब राष्ट्रकेलिए व्यय कियाजाएगा । दो,दो मील, पर पाठशाला, औषधालय और धर्मशालाओंका निर्माण किया जाएगा और राष्ट्र में कोई क्षुधित दीन, नग्न औरअशिक्षित न रहेगा अर्थमंत्री ! अबतक कोषमें कितना द्रव्य है ?

अर्थमंत्री—सम्राट ! इस समय सब मिलाकर पांच अरब मुद्रा कोषमें है । केवल नगररक्षक कोतवाल भोजने अपना हिसाब नहीं चुकायाहै ।

हम्मीर—भोज, अभी तक हिसाब क्यों नहीं चुकाया गया ?

भोज—सम्राट ! अर्थमंत्री व्यर्थही मुझे शकाकी दृष्टिसे देखतेहैं, अस्तु मैं इन्हें हिसाब देनेकेलिए प्रस्तुत नहीं । मुझसे हिसाब सम्राट लेसकतेहैं ।

हम्मीर—नगररक्षक ! जो द्रव्य तुम्हारे पास है, वह प्रजाका है। राजा और उसके अनुचर प्रजाद्रव्यके साक्षी और प्रहरी होतेहैं उसपर उनका अपना कोई अधिकार नहीं तुम्हें हिसाब देनाहोगा और अर्थमंत्रीके पास देनाहोगा । परिषदने उन्हीको यह कार्य सौंपा है ।

भोज—सम्राट, मैं अर्थमंत्रीको हिसाब देनेकेलिए लेशमात्र भी प्रस्तुतनहीं । मुझे आप जो दंड देना चाहें देसकतेहैं ।

हम्मीर—प्रजाद्रव्यको लोलुपताकी दृष्टि से देखने वाले की समस्त सम्पत्ति छीनलेना ही न्याय है । हम्मीर अपने सगे भाई केलिए भी न्यायकी उपेक्षा नहीं करेगा । अर्थमंत्री, भोज की

समस्त चल-अचल सम्पत्ति पर अधिकार करलो।

अर्थमंत्री—जो आज्ञा।

हम्मीर—सभासद गण! मुझे विश्राम करना है अस्तु दरबार विसर्जित कियाजाताहै।

(प्रस्थान)

(भोज, प्रीतमके अतिरिक्त शेष सबका प्रस्थान)

भोज—प्रीतम, अब मेरी सहनशक्तिकी सीमा समाप्तहोचुकीहै, हम्मीरके साथ ही माताके प्रथम गर्भसे जन्मलेनेके कारण मुझे रणथंभोर-राज्य का कम से कम अर्द्धभाग प्राप्त करनेका अधिकार है। किन्तु, हम्मीर, अपने साम्राज्यको लेकर तुमही चाटते रहते, मेरे पास जो अल्प सम्पत्ति थी, उसे मुझसे न छीनते, तो मैं जिस प्रकार अपना जीवन बिता रहा था, बितालेता। किन्तु अब मुझे प्यारी जन्मभूमिको त्यागकर कहीं जानाही हो।। हम्मीरके साम्राज्यमें भोजकेलिए स्थान नहीं।

प्रीतम—भोज! राजा के प्रत्येक शब्द में हालाहल या संजीवनी होती है। राजा की एक हुंकार से सैकड़ों समृद्धिशाली दाने दानेकेलिए लालायित होसकते हैं और एक मुसकराहट से द्वार-द्वार भटकने वाले लक्ष्मी पुत्र बनसकतेहैं। तनिक धैर्य धरो। अनुकूल समय आने पर संभव है तुम्हारी सब सम्पत्ति तुम्हें पुनः मिल जाए।

'जीवन्नरो भद्रशतानि पश्येत्।'

(दोनों का प्रस्थान)

दृश्य---२

स्थान---मारवाड़के निकट राजमार्ग

[नेपथ्यमें--रुदन, हाहाकार, स्त्री बच्चोंका चीत्कार, अग्निकी लपटें और धूम्र। शरणार्थियोंके वेश में अनेक हिन्दू स्त्री-पुरुष और बालकोंका प्रवेश]

कई शरणार्थी---भागो, भागो। शस्त्र उठाओ भागो, भागो। अलाउद्दीनकी तीन लाख सेनाका आक्रमण होगयाहै। भागो, भागो, प्राण बचाओ, स्त्रियोंकी लाज बचाओ। भागो भागो। (प्रस्थान)

(तीन हिन्दु स्त्रियोंके मुंहपर पट्टी बांधकर, और हाथोंको पीछे बांधकर लातेहुए तीन यवन सैनिकोंका प्रवेश)

प्र० य० सैनिक---अलाउद्दीन की सल्तनतमें मुसलमानों के लिए जो मौज है वह किसीको दुनियाके परदेपर कहां मिलेगी ?

द्वि० य० सैनिक---अरे मियां, दुनियांके परदे पर तो क्या, बहिश्त में भी कहां मिलेगी ?

तृ० य० सैनिक---और अलाउद्दीनकी फौज में नौकरी करना तो जिन्दा ही जिन्नत में पहुंचना है। नबी की मेहरबानी से जिन्नत में जितनी हूरें मिलेंगी उससे कई गुना ज्यादे और रोज नई नई हूरें अलाउद्दीन के फौजियोंको मिलती हैं।

(स्त्रियोंको धक्का देकर लेजाते हुए तीनों का प्रस्थान)

(लूटका माल लेकर मीरमुहम्मद, मलिकइज्जुदीन और रफ़ीकमुहम्मदका प्रवेश)

मलिक इज्जुदीन--आज हम लोगोंके हाथ अच्छा माल आया है। हिन्दुओंकी हजारों सालोंसे जमाकीहुई दौलत आज हासिल हुईहै। यह हिन्दुओंकी कौम भी खुदाने फजूल ही बनाईहै। ये बड़े कंजूस और पैसेको पीर समझतेहैं। हजारों बरत और त्यौहार इन्होंने सिर्फ फाकाकशीसे रुपया बचानेकेलिए बनाएहैं।

रफीक मुहम्मद--यह सब हिन्दुओंके पुरोहितोंके बुजुर्ग व्यास की करतूतहै। उसने अपने जजमान हिन्दुओंको सिखलाया

कि खुद तो फाकाकशी करते-जाओ और हलवा पूरी अपने पुरोहितोंको खिलाते जाओ।

मीर मुहम्मद—हिन्दु सबसे ज्यादे अपने देवताओंकी बुतोंको सजाकर रखते हैं। आज हम लोगोंने जो पन्द्रह मन्दर लूटे हैं उनसे पचास करोड़-से ज्यादा कीमतके सोना और जवाहरात मिले हैं। इतनी दौलत तो कोई बादशाह भी क्या जोड़ सकेगा जितनी हिन्दुओंने अपने मन्दरोंमें जमा कर रक्खी है।

रफीक मुहम्मद—हिन्दु अपनी दौलतको या तो बुतोंको सजानेमें खर्च करते हैं या अपनी दिलरुबाओंको जेवरोंसे लादनेमें।

मलिक इज्जुदीन—इसीसे तो जो मुसलमान एक हिन्दु औरत को छीन लेता है उसे खूबसूरत परीके अलावा दस बीस हजार रुपयेका जेवर भी मिलजाताहै, और जो मुसलमान जिन्दगीमें एक मरतवा भी किसी मन्दरको लूटलेताहै, वह मालामाल बन जाताहै।

रफीक मुहम्मद—मेरे मामाजान, बादशाह सलामत हर सिपाहीको जो बीस टका माहवारी तनख्वाह देतेहैं, वह फजूल है। हर एक सिपाही को लूटमें इतना माल मिलजाताहै जितना किसी मनसबदार या सूबाके हाकमको जिन्दगीभर ईमानदारीसे नौकरी करनेपर भी नहीं मिलसकता। चाहिए तो यह कि बादशाह सलामत सिपाहियोंको तनख्वाह देना बन्दकरके हरएक सिपाहीसे हर महीने एक सेर सोना लेलियाकरें।

मीरमुहम्मद—क्या बातेंकरतेहो मियाँ ? लूटके मालमें भी दूसरेका हिस्सा ? जंगमें जो फौजी जितना माल लूटलेआता है उसपर उसीका हक होताहै, 'यही पुराना दस्तूर है। मसलन मैंने

आज हिन्दुओंसे जो माल लूटाहै, उसका मालिक मैं हूँ। उसे मैंने लूटाहै। मैं उसमेंसे एक तोलाभी बादशाह या किसीको भी देनेके लिए तय्यार नहीं हूँ।

(उलूगखां और नुसरतखांका प्रवेश)

उलूगखां–तुम्हें देनाहोगा मीर मुहम्मद! जो कुछ तुमने हिन्दुओंसे लूटाहै, उस सब मालके बादशाह सलामत मालिक हैं और तो क्या तुम्हारे जिस्म और जिन्दगीके भी बादशाहसलामत मालिकहैं।

नुसरतखां–हमारे बहादुर सिपाही, हर महीने जो लाखों रुपएका माल काफिरोंसे लूटतेहैं और जो दर्जनों खूबसूरत औरतें उन्हें हर महीने मुफ्तमें मिलाकरतीहैं वह सब बादशाह सलामतकी ही बदौलत हैं। अगर एक दिनकेलिए भी बादशाह सलामत तुमसे अपनी मेहर हटालें तो तुम बिलकुल नाचीज बन्दा रह जाओ। और दर-दर ठोंकरें खातेफिरो।

मीर मुहम्मद–नुसरतखां! यह मैं भी समझताहूँ कि बादशाह सलामतकी मेहरके बगैर मैं एक बिलकुल नाचीज बन्दा हूँ। मगर जो माल मैंने हिन्दुओंसे लूटाहै पुराने दस्तूरके मुताबिक उसका मालिक मैं हूँ, बादशाह नहीं।

नुसरतखां–मीर, तेरी शेखी सातवें आसमानपर चढ़चुकीहै जो तू बादशाह सलामतका नाम भी इज्जतके साथ नहीं लेरहाहै।

मीरमुहम्मद–मेरे दिलमें बादशाहकेलिए जो इज्जत है वह सलामत लफ्ज हटादेनेसे घट नहीं जाती।

मलिक इज्जुदीन–बदतमीज, कमबख्त, नमकहराम! फिर भी बादशाह सलामतका नाम इज्जतके नहीं लेता?

रफीक मुहमद–बदतमीज। बगैर लिहाजके बकरीकी तरह जबान चलाताहै?

उलूगखां–इससे लूटका सारा माल छीनलो और इसको नंगा करके इसके मुंहपर कालिख पोतदो। कल इसको गधेपर चढ़ा कर दिल्ली बादशाह सलामतके पास भेजाजाएगा।

मीरमुहम्मद–इसका फैसला मेरी तलवार करेगी। आओ। उलूगखाँ और नुसरतखां पर हमला करताहै, दोनों आहत होकर भागनिकलतेहैं।

मलिक इज्जुदीन–नुसरतखांपर हमला करनेवाले मीर। मैं तेरी जबान उखाड़े बगैर न छोडूंगा आ।

(आक्रमण करताहै)

मीरमुहम्मद—नुसरतखाँके बदले आज तेरीही गरदन उड़ाता हूँ।

(आक्रमण करता है मलिक इज्जुदीन घायल होकर गिरजाताहै, रफ़िकमुहम्मद मीर मुहम्मदपर पीछेसे आक्रमण करताहै। मीर मुहम्मद मुड़कर उसके पेरमें खड्ग घुसेड़देताहै)

मीरमुहम्मद–आह! मैंने यह क्या करदिया? गुस्समें आकर बादशाहक भानजे रफीकमुहम्मद और सिपहसालार नुसरतखा के भाई मलिक इज्जुदीनका कतल करदिया। अब क्या होगा?

(नजरुलको गोदमें लेकर नूरजहाका प्रवेश)

नूरजहां–मीर! मीर! हमारे खेमेपर नुसरतखांने हमला करदियाहै। हमारा सब माल लूटलियाहै और खेमेंपर आग लगादीहै। जालिमने चिरागको कतल करदियाहै। मैं बड़ी मुशकिलसे नजरुलको लेकर भागआईहूँ। चलो, चलो जान बचाकर दिल्ली भागचलो।

मीरमुहम्मद– चिरागको कतल करदिया। तोबा, तोबा। दिल्ली जानेसे हमारी जानें न बचेंगी। बादशाहका भानजा

रफीक मुहम्मद मेरी तलवारसे दोजख पहुंचचुकाहै। अगर हम अलाउद्दीनके हाथ आगए तो वह हमारी जिन्दा ही खालें उतारदेगा।

नूरजहां—तो क्या करें ? अपनी तलवारसे मेरु और नजरुलका शिर उड़ादो फिर तुम भागकर अपनी जान कहीं न कहीं बचा ही लोगे। हमें साथ रखनेमें तुम्हें बड़ी तकलीफ होगी। जल्दी करो, किसीके पैरोंकी आहट सुनाईदेरहीहै।

मीरमुहम्मद—मैं अपने हाथसे अपनी वफादार औरत और अपने लख्ते-जिगरको काटडालूं ? नहीं ऐसा न होगा। चलो, हम भागकर रणथंभोरके राजा हम्मीर से पनाह माँगे।

नूरजहां—राजा हम्मीर से पनाह माँगे ? वह हिन्दु होतेहुए हमें कैसे पनाह देगा जबकि उसे पताहै कि हमलोग मुसलमान हैं और हजारों हिन्दुओंकी तबाहीमें हम लोगोंका हाथ है।

मीरमुहम्मद—हम्मीर सच्चा हिन्दू है। वह हिन्दु और मुसलमानमें फरक नहीं समझता। हिन्दु अपनी जानको कुर्बान करकेभी पनाह माँगनेवालेकी हिफाजत करतेहैं ऐसी सैकड़ों मिसालें हैं जिनमें हिन्दुओंने घायल, शिकस्त खाएहुए दुश्मनको अपने घरमें लेजाकर उसकी हिफाजत कीहै। बहादुरी, दिलेरी, फराकदिली सचाई, और ईमानदारीमें दुनियाँकी कोई भी कौम हिन्दुकौमके बराबर नहीं है। मुझे पूरी उम्मीद है कि हम्मीर हमारी हर तरहसे हिफाजत करेगा।

नूरजहाँ—तो चलो जल्दीकरो, उसीकी खिदमतमें पहुंचकर पनाह माँगें।

मीरमुहम्मद—अलाउद्दीनके जासूस कई तरहके वेश बनाकर सारे हिन्दुस्तानमें फिराकरतेहैं। इनसे बचनेकेलिए हमें मौका पाकर अपना लिबास फौरन तबदील करदेनाहोगा।

नूरजहाँ–ठीकहै। चलो।

मीरमुहम्मदके साथ नजरुजको गोदमेंलेकर नूरजहांका प्रस्थान

[नुसरतखां उलूगखां और कुछ यवन सैनिकोंका प्रवेश]

नुसरतखाँ—मेरे बहादुर सिपाहियों। मीरमुहम्मदके तमाम साथियोंकी जिन्दा ही खालें उतारडालो। ऐसा करनेसे पहले बागियोंकी आँखो के सामके उनकी औरतों और नौजवान लड़कियोंकी बेइज्जतीकरो। उनके छोटे छोटे बच्चोंको छीनकर उनके सामने ही टुकड़े-टुकड़े करडालो और बच्चों का कलेजा उनके माँ बाप के मुंह में डालदो।

प्र० यवन सैनिक—बहुतखूब। बहुत खूब। हम इन बागियों के साथ ऐसी सख्तीसे पेश आएंगे कि येभी याद करेंगे कि नुसरतखां की मुखालफतकरनेका क्या मजा मिलताहै।

(*सबका प्रस्थान*)

दृश्य—३

स्थान—रणथभोर, राजमार्ग

भोज—नहीं, प्रीतम! अब सन्तोष और सहनशक्तिकेलिए स्थान नहीं रहा। हम्मीरका व्यवहार कटुतर होता जारहाहै। हम्मीरके राज्यमें भोजकेलिए स्थान नहीं।

प्रीतम—भोज। तनिक और धैर्य रखो। आज सम्राट वैद्यनाथ मन्दिरमें दर्शनकरने जाएंगे। उस समय तुम भी आना। हम लोग सम्राट से कह सुनकर तुम्हारी सम्पत्ति तुम्हें दिलानेका प्रयत्नकरेंगे।

भोज—आशा तो नहीं। किन्तु तुम्हारे अनुरोधसे मैं उस समय उपस्थित होजाऊंगा। (दोनों का *विभिन्न मार्गों से प्रस्थान*)

[मीर मुहम्मदके पीछे नजरुलको गोदमें लेकर नूरजहांका भागते हुए प्रवेश। उनके पीछे बाण और नागरिकोंकी भीड़का प्रवेश]

प्र० नागरिक—मुसलमान हैं, मुसलमान हैं। पकड़ो, पकड़ो, मार डालो इसको।

द्वि० नागरिक—पकड़ो पकड़ो म्लेच्छको रोका लुटेरोंने कसा वेश बनाया है।

बाण—नही यह अलाउद्दीनका गुप्तचर है, पकड़ो पकड़ो।

(दूसरी ओर से महात्मा मोहनदासका प्रवेश)

म० मोहनदास—यह पुरुष कौन हैं जो फटे वस्त्र पहने, मुंह पर धूल पोतेहुए अपनी पत्नी और पुत्र के साथ भागता हुआ आरहाहै? इसका शरीर हृष्टपुष्ट है, वक्षस्थल सुदृढ़ है, बाहुएं विशालहैं। धूल भी इसके मुखके तेजको नहीं छिपासकी-है! चिथड़ोंको फाड़फाड़कर इसका वीरत्व दमकरहाहै। यह कौन है?

प्र० नागरिक—मुसलमान है। स्वामी जी! यह मुसलमान है, छूना नहीं।

म० मोहनदास—मुसमान होनेसे ही कोई अस्पृश्य नहीं हो जाता। जिसके बुरे कर्म हों उसीको छूनेमें पाप है।

द्वि० नागरिक—महात्माजी! यह मुसलमान है, म्लेच्छ है, लुटेरा है। मैंने इसे अब पहचाना, यह तो अलाउद्दीनका सेनानायक है। कल ही निकटके सायन्त प्रदेशोंसे लाखों रुपए का सुवर्ण और आभूषण हिन्दुओंसे लूटकर लेगया था।

बाण—अच्छा वह है यह। उन आततायी मुसलमानोंमेंसे है जिन्होंने राज और राजस्थान और सौराष्ट्रके ऊपर अनगिनित

अत्याचार, हत्याएं, अग्निकांड और लूटमार कीहैं। हिन्दुओंकी बहू-बेटियोंका अपमान कियाहै। तथा सैकड़ों मन्दिरोंको नष्ट-भ्रष्ट कियाहै। मारडालो, मारडालो। हिन्दुओंकी हत्या का बदलालो।

म० मोहनदास—केवल मुसलमान होनेसे ही किसीको लुटेरा कह देना अन्याय है और यदि इसने सौराष्ट्र और राजस्थान के हिन्दुओंपर अत्याचार भी कियाहै तो तुम्हें इससे क्या प्रयोजन? रणथंभोरके हिन्दुओंपर इसने कोई अत्याचार नहीं किया। यदि इससे बदला लेनाहो तो सौराष्ट्र और राजस्थानके हिन्दु लें। रणथंभोरके हिन्दुओंका इसने क्या बिगाड़ाहै!

बाबा—वाह, महात्माजी। आपतो ऐसी बातें कर रहे हैं जैसे राजस्थान और सौराष्ट्रके हिन्दुओंसे रणथंभोरके हिन्दुओं का कोई संबन्ध ही न हो। मुहम्मद बिनकासिमके आक्रमणसे लेकर आजतक हिन्दु इसी अभागा नीतिका पालन करतेरहेहैं।

म० मोहनदास—कैसे?

बाबा—सिन्धपर यवनों का आक्रमण हुआ, हिन्दुओंके घरों पर आग धधकाई गई। उनकी करोडों रुपए की सम्पत्ति छीनली गई। उनकी सहस्त्रों बहू बेटियाँ छीनकर ईराक और अरबके बाजारोंमें नीलाम की गईं। लाखों हिन्दुओंके रुधिरसे सिन्धका मरुस्थल रक्तरंजित होगया। किन्तु सौराष्ट्र राजस्थान और पंजाबके हिन्दु यह सब देखकरभी यही सोचतेरहे कि मुहम्मद बिनकासिम ने हमारा क्या बिगाड़ाहै। उससे बदलालें तो सिन्ध के हिन्दु लें।

प्र० नागरिक—भला, सिन्धके पराजित और मृतहिन्दु बदला किस प्रकार लेते?

बाबा—ठीक है इसी अभागी नीतिके कारण सिन्ध, तक्षशिला

पंचनद, दिल्ली, अयोध्या, काशी, बंग और अजमेरके राज्य एकके पश्चात् दूसरे यवनोंके दमनचक्रमें पिसतेगये और उनके निकटस्थ प्रदेशोंके हिन्दुओंने कोई प्रतीकार नहीं किया। इसीसे आज समस्त उत्तरपथपर मुसलमानोंका आधिपत्य है।

प्र० नागरिक—और यदि हिन्दुजातिकी यही नीति रही तो वह दिन दूर नहीं जब दक्षिणपथको भी दासताकी शृङ्खलाओंमें बद्ध होनापड़ेगा और सारा हिन्दुस्थान मुसलमानोंके दमनचक्रमें पिसकर कराहतारहेगा।

बाण—अवश्य,ऐसा होतारहेगा तबतक जबतक हिन्दु हिन्दुको प्रेमपूर्वक वक्षस्थलसे,लगाना नहीं सीखता। उसके सुख-दुःख और मानापमानको अपना सुखदुःख और मानापमान नहीं समझता तथा उसके मित्रको अपना मित्र और उसके शत्रुको अपना शत्रु नहीं मानता।

म० मोहनदास—घृणाका अन्त सद्भावनासे होताहै। वैरका नाश प्रेमसे होताहै। हिंसाका प्रतिकार अहिंसासे कियाजाताहै। इन्हें महाराजाके पास ....

[*वीर हम्मीर और सामन्तोंका प्रवेश, उनके पीछे रतिपाल भोज और प्रीतमका प्रवेश। हम्मीर महात्मा मोहनदासको प्रणाम करताहै।*]

समस्त—महाराजाधिराज रणथंभोर सम्राटकी जय!

मीरमुहम्मद- (*हम्मीरको प्रणाम करके*) हिन्दुलोग अपनी बातके धनी होतेहैं, यह खयाल करके बन्दा महाराजकी खिदमत में हाजिर हुआहै। या तो बन्दाको पनाह बखशिए या अपनी तलवारसे बन्दा, उसकी औरत और बच्चेके शिर उड़ादीजिए। यदि आप अपनी तलवारसे हमें कत्लकरडालें तो यह कोई

अन्याय न होगा क्योंकि हमने हिन्दुजातिपर जो जुल्म किएहैं उनका बदला हमें मिलना ही चाहिए।

हम्मीर—तुम हमारी शरणमें आएहो। हिन्दुलोग अपने प्राणोंका मोह त्यागकर भी शरणार्थीकी रक्षा करतेहैं। इसीलिए यदि तुम मेरेपुत्रकी भी हत्या करआते तोभी मैं तुम्हारी रक्षा करता। तुम हृष्टपुष्ट, वीरपुरुष दिखाईदेतेहो, तुम्हारी यह दशा किसनेकी हैं ?

मीरमुहम्मद—महाराज ? मैं दिल्लीके बादशाह अलाउद्दीनका सिपहसालार मीरमुहम्मद हूँ। अलाउद्दीनके सेनापति उलूगखाँ और नुसरतखाँने मामूलीसी बातपर मेरी सारी दौलत और कपड़ेछीनलिएहैं। मेरे बड़े लड़केको कतल करदियाहै और मेरे मुंहपर मिट्टी पोतदीहै। हम उनसे अपनी जान बचाकर भागआए हैं। मगर हमें डर है............

हम्मीर—मीरमुहम्मद ! डरनेकी कोई बात नहीं। जबतक हम्मीरके हाथमें खड्ग है और उसके धड़पर शिर है तबतक कोई तुम्हारे ऊपर आंख उठाकर भी नहीं देखसकता। अर्थ मंत्री ! मीरमुहम्मदको राजकोषसे दस सहस्र स्वर्ण मुद्राएं और सेनानायकोंके योग्य वस्त्र देदो। नगरके पूर्व भागमें जहां सामन्तगणोंके निवासस्थान हैं, वहां इन्हें एक भव्य भवन प्रदान करदो, और प्रधान मंत्रीके नाम एक पत्र इस आशयका लिखदो कि मीरमुहम्मदको बीस गांव देदिएजाएं।

रतिपाल—(भोजसे) देखा।

अर्थमंत्री—जो आज्ञा।

मीरमुहम्मद—महाराज हजूरने बन्दा को सिर्फ पनाह ही नहीं बख़शी है, बल्कि हजूरकी मेहरबानीकी नजर पड़ते ही बन्दोको इतनी जायदाद मिलगईहै, जितनी उसके पास जालिम

और लुटेरे अलाउद्दीनकी सल्तनतमें भी नहीं थी। बन्दा इस तलवारकी कसम खाकर वायदा करताहै कि बन्दा अपनी जिन्दगीको हजूरकी खिदमतमें कुर्बान करदेगा और कभी नमक-हराम साबित न होगा। मगर बन्दाको पनाह देकर हजूरने अलाउद्दीनसे दुश्मनी मोल लेलीहै।

हम्मीर—चिन्ता नहीं, जाओ, अर्थमंत्रीके साथ जाओ।

मीरमुहम्मद—बहुत अच्छा, हजूर !

(मीरमुहम्मदका अपनी स्त्री-बच्चेके साथ अर्थमंत्रीके पीछे प्रस्थान)

भोज—(*प्रीतमसे*) देखा।

(हम्मीर पीछे मुड़कर भोजपर दृष्टि डालताहै)

हम्मीर—संसारमें एकसे एक नीच प्राणी हैं। किन्तु समस्त प्राणियोंमें सबसे नीच कौआ होताहै। उसके पंख नोच डालने-पर भी वह अपना पुराना घोंसला त्यागनेको प्रस्तुत नहीं होता।

(भोज, प्रीतम और रतिपालके अतिरिक्त शेषका प्रस्थान)

भोज—प्रीतम ! प्रीतम ! हम्मीरने मर्मभेदी वाक्य-बाण मारा है। अब नहीं सहाजाता। शत्रुके सेनापति लुटेरे यवनकी इतनी प्रतिष्ठा और अपने सगे भ्राताके साथ ऐसा व्यवहार !

रतिपाल—अपने सगे भ्राताका इतना अपमान !

प्रीतम—हाय रे मनुष्य ! परायोंसे व्यवहार करते समय तू जितनी मृदुलता और शिष्टताका प्रयोग करताहै, यदि उसकी आधी भी अपनोंसे व्यवहार करते समय दिखलाता तो द्वेष, गृह कलह और वैमनस्य संसारपर न रहते।

रतिपाल—जिन वाक्य-बाणोंका मनुष्य अपरिचित पुरुषोंके सन्मुख प्रयोगकरनेसे भी सकुचाताहै, उन्हींसे निशंक होकर उन व्यक्तियोंपर प्रहार करताहै जो उसके सगे-संबंधी और अपने

होतेहैं और जिनकी सद्भावनाकी आशा उसे जीवन भर रहतीहै। (*प्रस्थान*)

भोज—प्रीतम! हम्मीरके राज्यमें भोजकेलिए स्थान नहीं। अब मुझे अलाउद्दीनकी शरणमें ही जानापड़ेगा। हम्मीर! यदि तुम मुझे शन्तिपूर्वक अपनी सामान्य जीविकासे निर्वाह करनेदेते, या उसे मुझसे छीनलेनेपर भी इस वाक्य-बाणसे प्रहार न करते तो भोज, जो तुम्हारे साथ ही माताके उदरसे इस संसारमें आयाथा, आज विवश होकर विधर्मी, अत्याचारी और देशशत्रु अलाउद्दीन की शरणमें न जाता।

प्रीतम—विधर्मी गोरीको देशपर आक्रमण करनेका निमन्त्रण देनेवाले जयचंदकी मैं सदा निंदा करतारहाहूँ। किन्तु आज मुझे ज्ञात होरहाहै कि उसे क्यों विवश होकर ऐसा करनापड़ा।

भोज—भविष्यमें जब भोजकी अस्थियां भारतभूमिकी धूल में मिलकर लुप्त होचुकेंगी, हिन्दुजातिकी भावी सन्तान भोजको देशद्रोही, धर्मद्रोही और जातिद्रोहीके नामसे पुकारेगी। रणथम्भोरके चारण भोजकी निन्दाके गीत गाएंगे और देशभक्त भोजके नामपर थूकेंगे। उस समय उन्हें यह स्मरण न रहेगा कि भोजको देशद्रोही, धर्मद्रोही और जातिद्रोही किसने बनाया है।

प्रीतम—तो क्या, भोज! तुमने चलेजानेका दृढ़ निश्चय करलियाहै?

भोज—हां प्रीतम! मैं आज रात्रिको ही प्यारी जन्मभूमिको छोड़कर चलाजाऊंगा। मातृभूमि! तेरी पवित्र रजसे ही भोज

का शरीर बनाथा, तेरी पवित्र गोदमें ही भोज खेलाथा, यदि अन्तमें भोजकी अस्थियोंकी भस्म भी तेरी पवित्र रजमें ही मिल जाती तो भोजका नश्वर, दुखी जीवन भी धन्य हो जाता, किन्तु ··· ··· ···(रोताहुआ धूलि उठाकर शिरपर मलताहै ।) प्रीतम ! मेरे अपराधोंको क्षमाकरना ।

प्रीतम—मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा, भोज ! अपने सुख-दुःखका जीवन मिल-जुलकर बितालेंगे ।

भोज—नगरमें यह प्रचारितकरके कि हम काशीयात्राको जा रहेहैं, आज रात्रिको ही दिल्लीकी ओर प्रस्थान करदेनाचाहिए ।

(वीणाका प्रवेश)

वीणा—दिल्लीकी ओर प्रस्थान—? देश, जाति और धर्मके शत्रु अलाउद्दीनके तलुवे चाटनेकेलिए ? प्राणनाथ ! मैं अपने जीवितरहते आपको देशद्रोही न बननेदूंगी । यदि सम्राटने आपका तिरस्कार कियाहै तो जन्मभूमि रणथंभोरने आपका क्या बिगाड़ाहै ? उसके ऊपर उत्पात मचानेकेलिए आप यवन सेना लाने क्यों··· ··· ··· ··· ···

भोज—यहां भी आगईहै चुड़ैल ? मेरा हृदय प्रतिहिंसाकी ज्वालासे दग्ध होरहाहै । हम्मीरने मेरा जो तिरस्कार कियाहै उसका प्रतिशोध लूंगा, अवश्य लूंगा । चाहे मार्गमें अड़नेवाले तुझ-जैसे सैकड़ों कंटकोंका मुख-मर्दन करके दूर फेंकनापड़े ।

(खड्गसे प्रहार करताहै, वीणा घायल होकर गिरपड़तीहै ।)

प्रीतम—भोज । भोज ! तुमने यह क्या किया ?

भोज—यह, सहधर्मिणी बनकर भी साथनदेनेवालीका बध !

(प्रीतमको खींचकर लेजातेहुए प्रस्थान)

वीणा—प्राणनाथ ! यदि तुम देशकी स्वतंत्रता और धर्मकी

मर्यादाकी रक्षा केलिए यवनोंसे युद्धकरने रणस्थलकी ओर प्रस्थानकरते तो तुम्हारी सहधर्मिणी वीणा तुम्हें खड्ग-कवचसे सुसज्जित करके रणस्थलमें भेजती। यदि तुम शत्रुओंका संहार करतेहुए वीरगतिको प्राप्त होजाते तो वीणा तुम्हारे शवको लेकर अपने शरीरको चितामें होम करदेती। किन्तु जब तुम निलज्जता पूर्वक देशद्रोही बनकर मातृभूमि और धर्मके शत्रुकी शरणमें जारहेहो तो वीणा तुम्हारा साथ नहीं देसकती!

(*मायाका प्रवेश*)

माया—वीणा! वीणा! हे भगवान! यह मैं क्या देखरहीहूँ?

वीणा—देशद्रोहीकी पत्नीकेलिए शोक न करो, माया!

माया—देश द्रोहीकी पत्नी?

वीणा—हा, तुम्हारे जेठ और तुम्हारे पति देश और धर्मके शत्रु अलाउद्दीनसे मिलने चलेगएहैं। उन्हें रोकनेके प्रयत्नमें तुम्हारे जेठने मुझे··· ··· ··· ···(मृत्यु)

माया—हां! देशद्रोहियो और हत्यारो! जाओ, तुम्हें कभी सद्गतिकी प्राप्ति न हो। (*वीणाके शिरको गोदमें रखकर*) आजका अभागा दिन रणथंभोरके इतिहासमें सदा लज्जाके साथ स्मरण कियाजाएगा। जब भ्राता अपने भ्राताको त्यागकर देश, जाति और धर्मके शत्रुको मातृभूमिपर आक्रमण करनेका निमंत्रण देनेकेलिए कुल-गौरव, देश-भक्ति तथा कौटुम्बिक मोहका बन्धन छिन्न-भिन्न करके जानेलगतेहैं तो राष्ट्रके शिरपर विनाश और पतनके यमदूत नृत्य करने लगतेहैं। रण-थंभोरके स्वतंत्रता-सूर्यको शीघ्र यवन-राहु ग्रसित करेगा। और इस यवन-राहुकी छाया तीव्र गतिसे प्रसारित होकर एक दिन समस्त हिन्दुस्थानको तिमिराच्छन्न करदेगी।

(पट)

दृश्य—४

स्थान—बांसा नदीके तटपर खिलजी शिविर

(उलूगखां एकाकी)

उलूगखां—हम्मीरने बागी मीरमुहम्मदको पनाह दीहै, रणथंभोरको रौंदडालनेकेलिए यह हमें अच्छा बहाना मिलगयाहै। हमारी फौजोंने अबतक हिन्दावत पार करलिया-होगा और रणथंभोरके देहात पर लूटमारमें मशगूल होंगे। हम्मीरने मुनिव्रत लियाहुआहै। अगर नुसरतखां उसे वैद्यनाथके मन्दिरमें जिन्दा पकड़नेमें कामयाब होगया तो समझलो सारा राजस्थान हमारे हाथ आगया। इस हम्मीरने राजस्थान और दक्खनके राजाओंका सुलतानके खिलाफ एक मुहाज कायम करनेकी कोशिश कीहै। काश! हम इन राजाओंमें फूट डालनेमें कामयाब होजाते। *(प्रहरीका प्रवेश)*

प्रहरी—सिपहसालार! हमारी फौजोंने रणथम्भोरके सारे देहातमें हिन्दुओंपर तबाही मचाना शुरू करदियाहै। रणथम्भोरसे दो राजपूत आएहैं और हजूरको मिलाना चाहतेहैं।

उलूगखॉ—फौरन लिवालाओ और दो सैनिकों को भी बुलाओ

(प्रहरीका प्रस्थान)

इन राजपूतों का क्या यकीन, कहीं धोकेसे हमला न करबैठें।

(दो सैनिकोंके साथ प्रहरी, भोज और प्रीतमका प्रवेश)

भोज—हम लोग रणथंभोरसे आएहैं और आपको बड़ी लाभदायक गुप्त बातें बतलासकतेहैं।

उलूगखां—अगर तुम वाकई नई और फायदामंद खबरें सुनाओगे तो तुम्हें मुंहमाँगा इनाम मिलेगा।

भोज—तुम्हारा सिपहसालार मीरमुहम्मद अपनी स्त्री और बच्चेको लेकर रणथंभोर हम्मीरकी शरणमें चलागयाहै।

उलूगखाँ—बिलकुल पुरानी बात है। हम्मीरने उसे दस हजार सोनेकी मुहरें, एक निहायत आला बंगला और बीस गांवकी जागीर देदीहै। यह कोई नई बात नहीं और कोई बताओ।

भोज—हम्मीरने मुनिव्रत धारणकियाहै और एक महीने तक किसी कार्यमें भाग नहीं लेगा।

उलूगखां—बिलकुल पुरानी बात है। हम्मीर आजकल अकेला वैद्यनाथ मंदरमें रहताहै। और कोई नई बात सुनाओ।

भोज—हम्मीर और उसके भाईमें वैमनस्य उत्पन्न होगयाहै।

उलूगखां—बिलकुल पुरानी बात है। हम्मीरके भाई भोज और प्रीतम हम्मीरसे झगड़ाकरके कल रातको ही सुल्तान अलाउद्दीनसे मिलनेकेलिए घरसे निकलपड़ेहैं। और कोई नई बात सुनाओ।

भोज—आपको इन सब बातोंका पता कैसे लगजाताहै?

उलूगखां—अलाउद्दीनके जासूस हिन्दुथानके कौने-कौने में हर वक्त फिरतेरहतेहैं और खुफियासे खुफिया बातोंका पता लगाकर हमें पहुंचातेहैं। अलाउद्दीनने हिन्दुस्थानके अलावा दूसरे मुलकोंमें भी जासूसोंका जाल फलारखाहै। और कोई नई खबर है?

भोज—और तो कोई नहीं। (कुछ सोचकर) हाँ, स्मरण आगया। हम्मीरके भाई भोज और प्रीतम यहाँ आपके सामने खड़ेहैं।

उलूगखां—मेरे सामने? हां, यह वाकई नई खबर है और इनामदेनेके निहायत काबिल है।

भोज—एक और समाचार आपके हितका है। हम्मीरके

सेनानायक रतिपालका मन भी हम्मीरसे फिरगयाहै और समय आनेपर वह भी अलाउद्दीनसे मिलजाएगा।

उलूगखां—हां, यह भी निहायत आला खबर है। आपको क्या इनाम दियाजाए?

भोज—आप सुल्तान अलाउद्दीनकेलिए एक पत्र लिखकर हमारे पास देदें; जिसे दिखाकर हम सुल्तानसे मिलसकें। और उनको हम्मीरके गुप्त भेदोंको बतासकें।

उलूगखां—बादशाह सलामतके पास यह हमारा पंजा दिखाकर बातचीत करलेना। यह पंजा सुल्तानकी सल्तनतके अन्दर जिस किसी ओहदेदारको दिखाओगे वह फौरन तुमसे बातकरेगा। (पंजा देताहै)

भोज-प्रीतम—बहुत अच्छा, अब आज्ञा दो, हम जाते हैं।

(प्रस्थान)

उलूगखां—जाओ।

उलूगखां—काफिरोंपर काबूपानेका अच्छा मौका हाथ आयाहै। इस वक्त अगर नुसरतखांने अकलमंदी और दिलेरीसे काम किया और हम्मीरको जिन्दा ही पकड़लेनेमें कामयाब होगया तो दिलकी सब हवश पूरीहोजाएंगी।

[यवन सैनिकका प्रवेश]

यवन—सैनिक हजूर! भागकर अपनी हिफाजतका इन्तजाम कीजिए। हिन्दुओंकी बहुत बड़ी फौजने हमारी फौजको चारों ओरसे घेरकर बीस हजार जवानोंका सफाया करदियाहै। और बाकी फौज चारों ओर तितरबितर होगईहै। जल्दी करिए। दुश्मन बहुत बड़ी तादादमें हमारा पीछा कररहेहैं।

(नैपथ्यमें—'हर हर महादेव' का तुमुलनाद।
उलूगखां और यवन सैनिक भागतेहैं।)

(धर्मसिंह और भीमसिंहका प्रवेश)

भीमसिंह—यवन छिपकर आक्रमणकरना जानतेहैं, सन्मुख खड़ा होकर युद्धकरनेका साहस इनमें नहीं होता। कायर हमारा आक्रमण होते ही उठभागे और हिन्दुओंसे छीनाहुआ अपना लाखों मुद्राओंका सामान यहीं छोड़गएहैं।

धर्मसिंह—लाखों मुद्राओंका नहीं, यह सामान करोड़ों मुद्राओंका है। एक लाख मुद्राकी तो वे स्वर्ण मूर्तियां ही हैं जिन्हें ये लुटेरे रुद्रपुरके विशाल मन्दिरसे उठालाएहैं। देखतेहो उनके खंड-खंड इधर-उधर बिखरेपड़ेहैं। यवन-लुटेरे यह सब द्रव्य हमारे लिए ही छोड़गएहैं।

भीमसिंह—देखो, देखो हमारे सैनिक शत्रुके समानपर भूखे गिद्धोंकी भांति टूटरहे हैं। धर्मसिंह बिगुल बजाओ। शत्रुओंका पीछाकरके उन्हें नष्टकर देनेका अति उत्तम अवसर है। इसे हाथसे न खो जानेदो।

धर्मसिंह—नहीं, भीमसिंह! भागतेहुए शत्रुओंका पीछाकरना हिन्दुओंकी धर्मनीति नहीं है। चलो, यह सामान लेकर वापिस लौटचलें।

भीमसिंह—युद्धमें राजनीतिका पालन होताहै, धर्मसिंह! धर्मनीतिका नहीं। यदि तुम्हारी इच्छाभी लूटकी सामग्रीको उठालेजानेकी हो तो लेजासकतेहो। मैं केवल सौ वीरोंको साथ लेकर यवन आक्रमणकारियोंका पीछाकरूंगा और उन्हें हिन्दावत घाटीसे बाहर खदेड़देनेपर ही विश्राम लूंगा। *(प्रस्थान)*

धर्मसिंह—करोड़ों मुद्राओंका सुवर्ण, आभूषण और वस्त्रादि जो यवनोंने हिन्दुओंसे लूटेथे, इधर-उधर बिखरेपड़ेहैं। लुटेरोंने सारे राजस्थानको रौंदडालाहै। वह देखो; किसी सामंतका

रत्नजटित शिरस्त्राण है। वह किसी धनी स्त्रीकी नथ है जिसपर हीरे जडे हैं। यह नीलमसे मंडित अंगूठी कई सहस्र मुद्राकी है।' इस बहुमूल्य सामग्रीका चतुर्थांश मैं लूंगा और शेष सब सैनिकगण आपसमें बांटलेंगे। लो सैनिक आही गए; लेचलो; इस बहुमूल्य द्रव्यको।

(कई हिन्दू सैनिकोंका प्रवेश और लूटका द्रव्य लेकर धर्मसिंहके साथ प्रस्थान)

(उलूगखां और कुछ यवन सैनिकोंका प्रवेश)

उलूगखां—मेरे बहादुर सिपाहियो ! भीमसिंह सिर्फ एकसौ सिपाहियोंको लेकर हमारा पीछा कररहाहै। हम लोगोंकी तादाद एक हजारसे ऊपर है। हम इन काफिरोंको जहन्नुममें पहुँचा सकतेहैं।

प्र०यवन सैनिक–सिपहसालार ! यह एक काफिर शैतानका बच्चा है। इन सबका मुकाबिला करना बड़ा मुश्किल है। ये हिन्दु मौतको तो कुछ समझते ही नहीं। बिजलीकी मानिन्द दुश्मनपर टूटपड़तेहैं। इनसे खुदा ही बचाए।

उलूगखां—नहीं, इतनी घबरानेकी बात नहीं है। हिन्दुओंमें सिर्फ बहादुरी ही है. उनमें उन चालबाजियों और होशियारियोंकी बिलकुल कमी है जिनमें माहिर होना हर एक फौजी और सियासत दानका काम है। ये बेवकूफ़ अपनी नेकनियती, ईमानदारी और सचाईपर फ़ख़रकरनाही अपनी शान समझतेहैं। इन्हें धोकेसे शिकशत देना बड़ा आसान है।

द्वि० यवन सैनिक–तो क्या चाल चलीजाए ?

उलूगखां–तुम सब छोटी-छोटी टोलियोंमें इधर-उधर भागना शुरूकरदो। जिससे दुश्मनको पूरा यकीन होजाए कि हमलोग उनका जरा भी मुकाबला नहीं करनाचाहते। मौका देखकर मैं

ढ़ोल बजाऊगा। ढ़ोलकी आवाज सुनते ही तुमसबने एकदम काफिरोंपर हमला करदेना। हमें जरूर कामयाबी हासिल होगी।

कई यवनसैनिक—बहुत अच्छा, बहुत खूब। *(सबका प्रस्थान)*

(भीमसिंह और कुछ हिन्दुओंका प्रवेश)

भीमसिंह—वीर सैनिको! लुटेरे सब भागगएहैं। मातृभूमि रणथंभोर यवनोंके अत्याचारोंसे मुक्त होगईहै। भगवान्! वह दिवस शीघ्र लाए, जब सारा हिन्दुस्थान यवनोंके अत्याचारोंसे मुक्त होजाए। आओ, इस हिन्दावत घाटीपर जो कि रणथंभोरका द्वारहै; बैठकर विजयगीत गाएं। अहा! यहांसे दृष्टि डालनेपर दूर-दूर तक रणथम्भोरकी हरी-भरी भूमि दृष्टिगत होतीहै। कितनी सुन्दर है यह मातृभूमि! पिता! तुम इस सुन्दर मातृभूमिका रुधिर बहानेकेलिए यवनोंको निमन्त्रणदेनेगएहो! आओ, विजयगीत गाएं।

(सब ढोल बजाकर गीत गातेहैं।)

गीत

गाओ सब नभ को गुञ्जार,
भारतभूका जय जय कार।
हिन्दूधर्मका जयजयकार ॥ गाओ० ॥
यवन—वाहिनी भागगई।
अगणित धनको त्यागगई।
आर्य जनोंका सुन हुङ्कार ॥ गाओ० ॥

(चारों ओरसे सशस्त्र यवन सैनिकोंका प्रवेश)

यवन सैनिक—ढोल बजगया। हमला करो, हमला करो। काफिरोंको खतम करो।

(हिन्दुओंपर आक्रमण करतेहैं।)

भीमसिंह—शस्त्र उठाओ, शस्त्र उठाओ।

(युद्ध; कई यवनोंकी मृत्यु; बहुतसे यवनोंके साथ उलूगखांका प्रवेश)

उलूगखां—देखा काफिरोंने अपनी मौतको खुदही बुलालिया! पकड़लो जिन्दा ही इस काफिर भीमसिंहको।

भीमसिंह—उलूगखां! सिंहको जीवित बन्दी बनालेना सरल है किन्तु भीमसिंहको जीवित ही बन्दी बनानेकी शक्ति तुम्हारी दुर्बल बाहुओंमें नहीं। आ। (*आक्रमण करताहै, उलूगखां घायल होकर भागजाताहै। दो यवन सैनिक पीछेसे भीमसिंहका पैर काटडालतेहैं।*)

भीमसिंह—मातृभूमि! मेरे पिता और चाचा देशद्रोही भोज और प्रीतमने धर्म और देशके शत्रु अलाउद्दीनकी शरणमें जाकर रणथंभोरके मस्तकपर जो कलंकका टीका लगायाहै उसे धोनेकेलिए ले वीणाके आत्मज भीमसिंहका रुधिर! (*अपने खड्गसे अपना शिर काटडालताहै।*)

(उलूगखांका पुनः प्रवेश)

उलूगखां—कहाँ गया वह काफिर? भागगया? सबके सब काफिर मरमिटे। अब कुछ बदलालिया। अब छाती थोड़ी ठंडी हुई।

(सबका प्रस्थान)

अङ्क २

दृश्य—१

स्थान—दिल्ली अलाउद्दीनका दरबार

(अलाउद्दीन, दरबारी लोग, मलिक अलाउलमुल्क, कोतवाल थानेदार, एक गड़रिया और एक मद्यप)

अलाउद्दीन—क्यों बे गड़रिये ! तुमने दुम्बेको चार जीतलसे जियादा कीमतपर क्यों फरोख्त किया ?

गड़रिया—जहांपनाह ! गल्ती होगई।

अलाउद्दीन—गल्तीका बच्चा ! कोतवाल ! ले जाओ हरामजादेको। इसकी जिन्दा खाल उतारकर भूसा भरवादो।

गड़रिया—हजूर ! हजूर जहांपनाह ! जहांपनाह !

कोतवाल—चुपकर, हजूरके बच्चे ! *(कोड़ा मारताहै।)*

गड़रिया—जहांपनाह ! मेरा दुम्बा बड़ा मोटा था। उसपर दस सेर पक्की चरबी थी। उसकी कीमत मामूली दुम्बेकी कीमतसे दुगनी... ... ...

अलाउद्दीन—दुगनी कीमतका बच्चा ! तुझे पता नहीं कि अलाउद्दीनकी सल्तनतमें हर चीजकी कीमत मुकर्रर है। उसमें मोटी-छोटी, लम्बी-चौड़ी दुबली-पतली, ताजा-बासीका कोई फरक नहीं होसकता। दुम्बा दुम्बा सब एक हैं। कोतवाल! यह बहुत चर-चर करताहै, पहले इसकी जीभ खींचलो, आंखें निकालली, फिर इसकी खाल उतारना।

कोतवाल—बहुत अच्छा, हजूर ! चल बे गड़रिए ! *(धक्का देकर लेजाते हुए प्रस्थान)*

अलाउद्दीन—काफिर ! तुमने क्या कसूर कियाहै ?

मद्यप--जहांपनाह! कल रातको थोड़ी-सीका ·········

अलाउद्दीन—थोड़ी-सीका बच्चा! हमारी सल्तनतमें आम रियायाको शराब पीनेकी मनाही है, फिर तुमने शराब क्यों पी ?

मद्यप--जहांपनाह! पेटमें दर्द था, सिर्फ दो बूंद··· ···

अलाउद्दीन--दो बूंदका बच्चा! थानेदार! लेआओ, हरामजादे को, जिन्दा ही कुएंमें ढकेलदो।

थानेदार---बहुत अच्छा हजूर! चल बे शराबी (*मद्यपको धक्के देकर लेजाताहै।*)

(तीन हिन्दुओंको बन्दी बनाकर लातेहुए कोतवालका पुनः प्रवेश)

कोतवाल--जहांपनाह! ये हिन्दु सल्तनतके हुक्मकी परवाह न करके सरेबाजार ऊंचा शिर करके घूमरहेथे। इनमेंसे सुफेद पगड़ी वालेके घरमें सोनेके जेवर मिलेहैं। और काली टोपीवालेके पास पीतलका लोटा है और इस बड़ी मूछोंवालोंने अपने मकानपर सुफेदी करदीहै।

अलाउद्दीन—गद्दार काफिरो! तुमने अलाउद्दीनके हुक्मकी तौहीन कीहै? तुम शिर ऊंचा उठाकर बाजारमें फिरतेहो ?

प्र० हिन्दू—नहीं, जहांपनाह, हमारी इतनी मजाल कहां? मैं बाजारमें शिर नीचा करके चलरहाथा, अचानक कौवेने मेरे शिरपर बिष्टा करदी, इसलिए मैंने शिर ऊपर··· ··· ···

अलाउद्दीन—शिर ऊपरका बच्चा! कोतवाल! लेजाओ काफिरोंको बाजारके चौकमें जिन्दा जलादो। और सल्तनतभरमें हर हिन्दुके मकानकी तलाशी लेकर सोने-चांदीके जेवर और तांबे-पीतलके बरतन छीनलो। जब इन काफिरोंको खानेकेलिए

मुट्ठीभर अन्न न मिलेगा और पहननेकेलिए कपड़ा नसीब न होगा, तब ही ये बगावतें करनेसे बाज आएंगे।

अलाउद्दीन--वजीरे आजम ! सारी सल्तनतमें मुनादी करवादो कि बादशाह सलामतने सिकंदर आजमकी तरह तमाम दुनियाको फतह करनेका इरादा करलियाहै। इसलिए बहुत जल्दी ईरान, खुरासान, तुर्किस्तान, चीन, तिब्बत वगैरह मुल्कोंपर हमला करनेकेलिए आम लाबन्दी कीजाएगी। जो कोई मोटा-ताजा, तकड़ा आदमी भरती होनेसे इनकार करेगा उसकी जिन्दा खाल उतारकर सारे बाजारमें फिराईजाएगी। आजसे हमारे सिक्कोंपर भी "सिकन्दर आजम" का खिताब शाया किया जाएगा।

दरबारी--बहुत खूब ! बहुत खूब ! सिकन्दर आजम ! जिन्दाबाद !

अलाउद्दीन—वजीरे आजम ! जुम्माकी नमाजके बाद कल एलान करदो कि बादशाह सलामतने हजरत मुहम्मदसाहबकी तरह नया मजहब चलाने और पैगम्बर बननेका इरादा कर-लियाहै। जिस तरह हजरत पैगम्बरके चार साथी थे उसी तरह मेरे साथी हैं—अलगूखां, नुसरतखां, और अलफखां। इनकी मददसे मैं हजरत पैगम्बरकी मानिंद नया मजहब चलानेमें पूरी-पूरी कामयाबी हासिल करसकताहूँ। मेरी तलवार और मेरे दोस्तोंकी तलवार सब ठीककर लेंगी। जो शख्स नए मजहबको इख्तयार करनेमें इनकारी करेगा उसको जिन्दा जलादियाजाएगा।

दरबारी—बहुत खूब ! बहुत खूब ! हजरत पैगम्बर ! जिन्दाबाद !

अलाउलमुल्क—बादशाह सलामत ! बेअदबी मुआफ हो।

पैगम्बरोंका रुतबा खुदाने बादशाहोंकेलिए कभी नहीं बनाया। इस वास्ते जहांपनाह पैगम्बर बनने और नया मज़हब चलानेका खयाल दिलसे निकालदें। दूसरी सल्तनतोंको फतहकरना निहायत आला खयाल है। मगर ईरान, खुरासान, तुर्किस्तान, चीन और तिब्बतपर हमलाकरनेकी बनिस्बत राजपूताने और दक्खनकी हिन्दू रियासतोंको फतह करके सल्तनतमें मिलाना निहायत जरूरी है।

अलाउद्दीन—बेशक। खुदाने तुम्हें जिस तरह हाथी-जैसा मोटा जिस्म दियाहै उसी तरह हिम्मत भी दीहै। तुम्हारी बातें गौरकरनेके काबिल हैं।

अलाउलमुल्क—अभी तक रणथम्भोर, चित्तौड़, देवगिरी, गोंडवाना, उज्जैन वगैरह कई हिन्दु रियासतें दक्खनमें हैं जिनपर बादशाह सलामतको फौरन फतह हासिलकरनीचाहिए।

अलाउद्दीन—बेशक।

प्र० दरबारी—जहांपनाह! सुनाहै कि चित्तौड़के राणा रत्नसिंहकी औरत पद्मिनी निहायत खूबसूरत है जिसके जिस्मसे हरवक्त खुशबू फैलतीरहतीहै। वह सारे हिन्दुस्तानकी कमसिन औरतोंमें सिरताज है। उसके सामने जिन्नतकी हूरें भी हेच हैं।

अलाउद्दीन—हमारे मुकाबलेका बहादुर बादशाह हिन्दुस्तान में दूसरा नहीं इस वास्ते यह कमसिन हमारे ही हरमके काबिल है। वजीर! फ़ौरन रत्नसिंहको हुक्मनामा लिखकर भेजो कि वह इस परीको फ़ौरन हमारी खिदमतमें पेशकरे।

वजीर—बहुत अच्छा, जहांपनाह!

(जासूसका प्रवेश)

जासूस—जहांपनाह! खबर मिलीहै कि बादशाह सलामतके

भानजे रफीक मुहम्मद और सिपहसालार नुसरतखांके भाई मलिक इज्जुद्दीनके कातिल साबिक सिपहसालार मीर मुहम्मदको रणथम्भोरके राजा हम्मीरने पनाह दीहै। और जहांपनाहके भानजेको कतल करदेनेके इनाममें कातिलको दस हजार सोनेकी मुहरें, एक निहायत आला बंगला और बीस गांवोंकी जागीर दीहै जिनकी सालाना आमदनी एक लाख टका है।

अलाउद्दीन—(*दांत पीसकर*) वजीर! फौरन रणथम्भोरपर दुबारा हमला करनेकेलिए एक लाख फौज और दो लाख लुटेरा फौज भेजकर रणथम्भोरकी ईंटसे ईंट बजादो।

वजीर—जो हुक्म, जहांपनाह!

(*द्वारपालका प्रवेश*)

द्वारपाल—जहांपनाह! रणथम्भोरके राजा हम्मीरके भाई भोज और प्रीतम सिपहसालार उलूगखांसे पंजा लेकर आएहैं और दरवाजेपर खड़े हैं। हुक्म हो तो हाजिर करूं।

अलाउद्दीन—हां, फौरन हाजिर करो। (*द्वारपालका प्रस्थान*) हम्मीरने शायद घबराकर सुलहकेलिए अपने भाइयोंको भेजा होगा। जो शिकार एक बार अलाउद्दीनके पंजेमें फंसजाताहै वह बचकर नहीं निकलसकता।

(*द्वारपालके साथ भोज और प्रीतमका प्रवेश*)

द्वारपाल—जहांपनाह! राजा हम्मीरके भाई भोज और प्रीतम हाजिर हैं।

अलाउद्दीन—आइए, राजा साहब! रणथम्भोरसे चलकर दिल्ली पहुंचनेमें आप लोगोंको बड़ी तकलीफ हुईहोगी। हम आपके आरामका इन्तजाम करवादेतेहैं। हमारे लायक कोई खिदमत बतलाइए।

प्रीतम—बादशाह सलामत ! आपके प्रेमभरे वचनोंसे हमारी थकावट दूर होगईहै। आपके अन्दर जो अतिथि-सत्कारकी भावना है वह सिद्ध करतीहै कि आप सारे हिन्दुस्थानके सम्राट बननेयोग्य हैं।

भोज—बादशाह सलामतने जितना प्रेम और सत्कार हम विधर्मी और अपरिचित पुरुषोंके प्रति प्रकट कियाहै यदि उसका आधा भी हम्मीर अपने सगे भाई भोज और प्रीतमके प्रति दिखलाता तो हम दोनोंको अपनी मातृभूमिको छोड़कर बादशाह सलामतकी शरणमें न आनापड़ता।

अलाउद्दीन—राजा साहब ! मेहमानोंकी खातिरकरना हरएक मुसलमानका फर्ज है।

भोज—बादशाह सलामत ! हमारे भाई रणथंभोरके राजा हम्मीरने हमारी सम्पत्ति छीनलीहै और हमें देशसे निकालदियाहै। हम दोनों आपकी शरणमें आएहैं।

अलाउद्दीन—राजा साहब ! हम्मीरने आपसे जो बदसलूक कियाहै, उसका हम पूरा-पूरा बदलालेंगे। वजीर ! राजा भोज और राजा प्रीतमको राजपूतानेके उस इलाकामें जो हालमें ही जीतागयाहै दस लाख जीतल सालानाकी जागीर देदो। दिल्लीमें ठहरनेकेलिए इनको दो शानदार महल और बीस हजार जीतल नकद देदो। इसके अलावा इनको बीस-बीस लौंडियां और बीस, बीस हिजड़े भी देदो।

वजीर—जो हुक्म जहांपनाह !

अलाउद्दीन—राजा साहिबान ! आप लोग वजीर साहबके साथ जाएं। कल हम हम्मीरपर हमला करनेकेलिए तीन लाख फौज भेजदेंगे और खुद भी रणथंभोरकी ओर कूचकरेंगे।

वजीर! पंजाब, बंगाल और बिहारके सूबेदारोंको हुक्म भेजदो कि हर सूबेसे एक लाख फौज और दो लाख लुटेरा फौज राजपूतानेपर चढ़ाईकरनेकेलिए भेजदीजाए। जिन्हें काफिरोंको मारकर गाज़ी बननेकी ख्वाइश हो, खूबसूरत हिन्दु औरतें हासिलकरनेकी हबस हो, लूटमारका शौक हो और जिन्हें हिन्दुओंके घर व जानमालको तबाहहोते देखनेमें लुत्फ़ आताहो, वह सब साथ चलेआवें।

वजीर—जो हुक्म, जहांपनाह!

(भोज और प्रीतमको साथ लेकर प्रस्थान)

अलाउद्दीन—यह हिन्दुओंकी कौम जितनी बहादुर है, उतनी ही बेवकूफ़ है। आपसकी फूट और हदसे ज्यादा ईमानदारीकी वजहसे ही यह कौम तबाह होरहीहै।

(पट)

दृश्य—२

स्थान—रणथंभोर-दरबार

मीरमुहम्मद—सम्राट! जो अपनी जनमभूमिके दुश्मनसे जामिलताहै, उसे किस नामसे पुकाराजाताहै?

हम्मीर—उसे देश-द्रोही कहतेहैं, मीरमुहम्मद!

मीरमुहम्मद—सम्राट! देश-द्रोहीको क्या सजा दीजानी चाहिए?

हम्मीर—देश-द्रोहीकेलिए मृत्युदंड ही न्यायसंगत है।

मीरमुहम्मद—सम्राट! बेअदबी मुआफ हो। आपके भाई भोज और प्रीतम दिल्लीमें दुश्मनसे जाकर मिलगएहैं। अलाउद्दीनने उन्हें एक बड़ी जागीर मेवाड़के नजदीक दीहै।

सम्राटकी इजाजत हो तो मैं देश-द्रोहियोंको उनकी करनीका मजा चखादूं ।

हम्मीर—अवश्य, देश-द्रोहीको दंडदेनेका अधिकार प्रत्येक देश-भक्तको है ।

(खड्गसे प्रणाम करके मीरमुहम्मदका प्रस्थान)

(दूतका प्रवेश)

हम्मीर—युद्धका क्या समाचार है ?

दूत—सम्राट ! महाबलाध्यक्ष वीरमने पूर्वकी ओरसे शत्रुपर आक्रमण कियाहै और सेनानायक रणमल्लने उत्तर-पूर्वसे । दक्षिण-पूर्वकी रक्षाका भार रतिपालने संभाला है और पश्चिमकी ओर सेनानायक मीरमुहम्मदकी सेना शत्रुपर पीछेसे आक्रमण करदेनेकेलिए छिपीपड़ीहै । इसीप्रकार अन्य सेनानायकोंने विभिन्न दिशाओंसे आक्रमण करनेका आयोजन कियाहै ।

हम्मीर—शत्रुसेनाका संचालन किसके हाथमें है ?

दूत—सम्राट ! उलूगखां इस बार भी प्रधान सेनापति है ।

हम्मीर—अच्छा, महाबलाध्यक्षसे जाकर कहो कि आज यवनोंको रणथंभोर-भूमिसे बाहर अवश्य खदेड़देनाहै । आवश्यकता पड़नेपर मैं भी रणभूमिमें आसकताहूँ ।

दूत—जो आज्ञा, सम्राट ! *(प्रस्थान)*

हम्मीर—इस समय हमारी पचास सहस्र सेना युद्ध-स्थल उतरीहै । शेष बीस सहस्र विश्राम कररही है । शत्रु-सेना लगभग तीन लाख है । एक-एक हिन्दु सैनिक यदि कमसे कम छः शत्रु सैनिकोंको यमलोक पहुंचाए तो इस यवन-कलंकको हिन्दुस्थानसे सदाकेलिए मिटायाजासकताहै ।

(द्वि० दूतका प्रवेश)

द्वि० दूत—सम्राट ! हमारी सेनाओं द्वारा सात ओरसे

शत्रु-सेनापर भयंकर प्रहार किएजानेकेकारण शत्रु-सेनाका अधिकांश भाग काटडालागयाहै। और कुछ शत्रुसेना भाग खड़ीहुईहै। केवल सेनानायक रतिपालकी सेना चुपचाप खड़ीरहीहै। यदि रतिपालकी सेना भी आक्रमण करदेती तो अब तक युद्ध समाप्त होगयाहोता। *(प्रस्थान)*

हम्मीर—रतिपालकी सेना संभवत: छिपकर आक्रमण करनेकी बाट देखरही होगी।

(तृतीय दूतका प्रवेश)

तृ० दूत—सम्राट! शत्रु-सेना लगभग एक लाख शवों और आहतोंको छोड़कर रण-क्षेत्रसे भागखड़ीहुईहै। हमारे सैनिक इस समय शत्रुकी लाखों रुपयेकी लूट-सामग्रीको आपसमें बांटनेमें लगेहैं। *(प्रस्थान)*

हम्मीर—भगवान् वैद्यनाथकी कृपासे म्लेच्छोंकी अपार सेनाको हमारे वीरोंने मारभगायाहै। इस प्रसन्नतामें एक विशाल दरबार किया जाएगा और सेनानायकों तथा वीर सैनिकोंको पुरस्कार दिएजाएंगे। मंत्री आजही इस आशयकी घोषणा करवादो।

मंत्री—जो आज्ञा, सम्राट

(मीरमुहम्मद और बंदी वेशमें प्रीतमका प्रवेश)

मीरमुहम्मद—*(खड्गसे प्रणाम करके)* सम्राट! भोज और प्रीतमकी जागीरें जो इन देशद्रोहियोंने अलाउद्दीनसे हासिल कीथीं, फतह करके सम्राटकी सल्तनतमें शामिलकरदीहैं और प्रीतम सम्राटकी खिदमतमें हाजिर है।

हम्मीर—प्रीतम मेरा भाई है, किन्तु देशद्रोहका अपराध करनेकेकारण इसे आजन्म कारावास या मृत्युदंडदेना ही न्याय

है। मैं अपने सगे भाईकेलिए भी न्यायकी उपेक्षा नहीं करसकता। मीरमुहम्मद ! प्रीतमको नगररक्षकके पास भेजदो और कहदो कि सम्राटने उसे आजन्म कारावासका दण्ड दियाहै।

मीरमुहम्मद—जो हुक्म, सम्राट ! (प्रीतमको लेजानाचाहताहै।)

(दुर्गावती और मायाका प्रवेश)

दुर्गावती—प्रीतमने जो अपराध कियाहै वही मीरमुहम्मदने भी कियाथा, सम्राट ! दोनोंने अपनी मातृभूमिके विरुद्ध विधर्मी देशशत्रुओंकी शरण लीहै। किन्तु भोज और प्रीतमने देशद्रोह करके मातृभूमिपर जो कलंक लगायाथा उसे भोजकी स्त्री वीणा और उसके पुत्र भीमसिंहने अपने रुधिरसे और प्रीतमकी स्त्री मायाने अपने अश्रुओंसे धोडालाहै। इसलिए सम्राट प्रीतमको नगररक्षकके पास न देकर मायाके पास सौंपा जाए जिससे विश्वासघात करके प्रीतम बादशाहके पास चलागयाथा। माया अपने विश्वासघाती पतिको जो दंड देना उचित समझेगी स्वयं ही देदेगी।

हम्मीर—भोजकी पत्नी और पुत्रने अपने प्राणोंका वलिदान करके देशद्रोही भोजको भी अमर बनादियाहै। किन्तु देवि ' प्रीतमके संबंधमें विचार करनेकेलिए कल परिषदको बुलाया-जाएगा। परिषदका निर्णय सबको मान्य होगा। उस समय तक प्रीतम भ्रातृवधू मायाके पास बन्दी रहेगा। मीरमुहम्मद! प्रीतमकी हथकड़ियां खोलदो।

(दुर्गावती और मायाका प्रस्थान)

हम्मीर—मीरमुहम्मद तुम्हारी असीम वीरता और राज्य-भक्तिसे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ। आजसे तुम्हें अश्वारोही सेनाका प्रधान सेनापति नियुक्तकियाजाताहै। जबतक मेरे पास तुम जैसे

निर्भीक और स्वामिभक्त सेनापति हैं तबतक शत्रु रणथंभोरको कुछ भी हानि नहीं पहुंचासकता।

मीरमुहम्मद—सम्राट ! मैं तो आपका तुच्छ सेवक हूँ। मेरे ऊपर सम्राट जो मेहरबानी करतेहैं; मीरमुहम्मद अपनेको उसके काबिल साबितकरनेकी कोशिश करेगा।

(प्रीतमके अतिरिक्त शेषका प्रस्थान)

प्रीतम—प्रीतम ! तुम देशद्रोही बने। विदेशी, विधर्मी, अत्याचारी यवनोंके क्रीतदास बने। अन्तमें एक यवन द्वारा पराजित होकर अपने उसी भ्राताके सन्मुख हथकड़ियां पहनाकर उपस्थित किएगए जिसे त्यागकर तुम चलेगए थे। अब और क्या देखना चाहतेहो ? अपना रुधिर देकर भी अब तुम देश-द्रोहका कलंक नहीं धोसकते। त्रिशंकुके समान तुम दोनों ओरसे भ्रष्टहुए। तो, लो। संभालो अब अन्तिम माग। [अंगूठी चाटताहै।] हम्मीर ! अब दो प्रीतमको आजन्म कारावास।

—पट—

दृश्य—३

स्थान—रणक्षेत्र-अलाउद्दीनका शिविर

अलाउद्दीन—बेशक हिन्दु बहुत कौम बहादुर और दिलेर है। मगर इस कौममें जितनी बहादुरी है, उतनी ही बेवकूफी भी है। ये अपनी नेकनीयती, ईमानदारी और फराकदिलीपर इतना फख्र रखते हैं जितना कोई परले दर्जेका बेवकूफ ही रखसकता है। इनमें आपसकी फूट इतनी जियादा है कि खुद ही आपसमें कटमरतेहैं। मुसलमानोंको हिन्दुस्तानमें हिन्दुओंकी इन्हीं कमजोरियोंकी वजहसे कामयाबी हासिलहुईहै।

उलूगखाँ—तो जहांपनाह ! कौनसी तरकीब हम्मीरको फंसाने की कीजाए ?

(जासूसका प्रवेश)

जासूस—जहांपनाह ! रतिपालने कहलाभेजाहै कि सुल्तान सलामत अपनी फौजको चुपचाप हिन्दावतदर्रे तक भेजदें। वहांसे हम्मीरके पास सुलहके पैगाम भेजतेजाएं जिससे दुश्मन तय्यारी न करसके। और इधर धीरे-धीरे अपनी फौजके साथ हिन्दावतदर्रा पार करलें। सुलहकी शर्तें ऐसी रखतेरहें जिन्हें मंजूरकरना हिंदु अपनी शानके खिलाफ समझतेहैं। जब सारी फोजें रणथंभोरके बिलकुल नजदीक पहुंचजाएं तब एकाएक हमला करदेनेसे पूरी पूरी कामयाबी हासिलहोगी। *(प्रस्थान)*

अलाउद्दीन—बेशक यह तदबीर बहुत अच्छी है। उलूगखां ! फौरन नुसरतखांके साथ अपनी दो लाख फौज और तीन लाख लुटेरा फौजको लेकर रात ही रात हिन्दावतदर्रे तक पहुंचजाओ और रतिपालकी बताईहुई तदबीरसे फायदा उठाओ।

उलूगखां—जो हुक्म जहांपनाह ! *(उलूगखां और नुसरतखां का प्रस्थान)*

अलाउद्दीन—इन काफिरोंको हमेशाकेलिए काबूमें रखनेके लिए क्या तरकीबें कीजाएं जिससे ये फिर न तो बगावत कर-सकें और न अपनी आजादी हासिलकरसकें ?

प्र० दरबारी—जहांपनाह ! मेरी समझसे तो सबसे अच्छी तरकीब यह है कि हर हिन्दुको एक बोतल शराब पिलाईजाए और अय्याशीमें इनको फंसादियाजाए।

द्वि० दरबारी—यह तो बहुत रुपया खर्च करानेवाला तरीका है जहाँपनाह ! बेहतर यह है कि हर एक हिन्दुको एक

तोला अफीम [रोज खिलाईजाए जिनसे वह दिनभर पीनक ही लेतारहे !

तृ० दरबारी—जहाँपनाह ! यह भी बहुत खर्चीला तरीका है। एक तोला रोजका मतलब है तीन सौ पैंसठ तोला याने तिहत्तर छटाँक याने चार सेर नौ छटाँक अफीम हर साल ! अगर साठ साल तक हर एक हिन्दू जिन्दा रहा तो ८ मन पक्की अफीम खा जाएगा ! तोबा !! तोबा !! सबसे सस्ता तरीका है सबीको एक एक तोला संखिया खिलाना, न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

अलाउलमुल्क— जहाँपनाह ! काफिरोंको खतमकरनेका एक ही तरीका है कि सबको जबरदस्ती मुसलमान बनादिया जाए। और जो इस्लामको कबूलकरनेमें आनाकानी करे उनको जहन्नुममें पहुंचादियाजाए। तमाम मंदिरोंको तोड़कर उनकी जगहपर मस्जिदें तामीर कीजाएं। हिन्दुओंके तमाम कुतुबघरोंपर आग लगादीजाए और हिन्दु मजहबके रीत-रिवाजों और बुतपरस्तोको कानूनीतौरपर बन्द करदियाजाए।

अलाउद्दीन— बेशक अलाउलमुल्क तुम्हारी तमाम बातें गौर और अमल करनेलायक हैं। शायर खुसरो ! तुम भी कोई निहायत आला तरीका बगावतें रोकने का और हिन्दुओंको खतमकरनेका बतलासकतेहो ?

अमीर खुसरो— हाँ, जहाँपनाह ! हिन्दुओं को बगावत करनेसे हमेशाकेलिए रोकनेका एक ही और असली तरीका यह है कि हिन्दुओंके साथ बड़े प्रेम-मुहब्बतका सुलूक-बर्ताव कियाजाए। हिन्दु-मुसलमान दोनों की मिली-जुली बोलीको अपनाया-जाए। मुसलमान गोकशी बन्द करदें, हिन्दुओंके जो मन्दिर तोड़डालेगए हैं, वे फिरसे तामीर करवादिएजाएं

और आपस में खाने-पीने और विवाह-शादीका रिवाज जारी कियाजाए। हिन्दुओंको बड़े-बड़े ओहदों पर ... ...

अलाउद्दीन— खुसरो ! शायर खाली शायर ही होतेहैं। इतने बड़े आलम फाजल होनेपर भी तुमने निहायत बेवकूफी भरी बात कहीहै, हमारेलिए काला अक्षर भैंस बराबर है, मगर हम जानते हैं कि हिन्दुओं को कैसे काबू करनाचाहिए।

अमीर खुशरो— कैसे जहांपनाह ?

अलाउद्दीन—हर हिंदुकी कमाईका कमसेकम आधा हिस्सा उससे जबरन छीनकर खजानेमें जमाकरनाचहिए। उसके पास सिर्फ इतना पैसा बाकी रखना वाजिब है जिससे उनकी रोटी-कपड़ेका गुजारा बड़ी मुशकिलसे होसके। हिंदुओंके ऊपर जितने जुल्म कियेजाएं उतना ही बेहतर। हर तरहसे इन्हें जलील कियाजाए। जिसको न पेट भरनेकेलिए रोटी मिलेगी न जिस्म ढंकनेकेलिए कपड़ा, उसका खयाल ही बगावतकी तरफ नहीं जासकता। अगर फिर भी कोई सिर उठावे तो उसकी जिंदा ही खाल उतारकर गाँव-गाँव में फिराईजाए।

दरबारी—बहुत खूब ! बहुत खूब !

(भोज प्रवेशकरके अपनी चादर भूमिपर बिछाताहै, और फिर समेटताहै।)

अलाउद्दीन—राजा भोज ! आज तुम जमीन पर क्यों लोटरहेहो और रोते-रोते अपनी चादर क्यों समेट रहेहो ?

भोज—बादशाह सलामत ! जहाँपनाहके चरणोंमें आजाने पर भी हम्मीरने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। जहाँपाहकी कृपासे सेवकको जो जागीर मिलीथी, वह हम्मीरने लूट खसोट लीहै। और मेरे भाई प्रीतमको बन्दी बनालियाहै।

अलाउद्दीन—इतनी बदतमीजी ! मैं सारे हिंदुस्तान के

हिंदुओंको तबाह करदूंगा और हम्मीर तो क्या सरी राजपूत कौम के बच्चे-बच्चेकी बोटी उड़ादूंगा।

(जासूसका प्रवेश)

जासूस—जहाँपनाह ! रतिपालके पास बादशाह सलामतका भेजाहुआ हीरोंका हार पहुंचादियाहै। उसने कहलाभेजाहै कि अगर सुल्तानकी फौज रणथंभोर किलेके चारों ओर तमाम फसलको बरोबाद करदे तो यकीनन बादशाह सलामतको पूरी कामयाबी हासिलहोगी।

अलाउद्दीन—बहुत अच्छा, रतिपालसे कहदो कि हम उसकी वफादारीसे निहायत खुश हैं और रणथंभोर फतह करलेने पर उसको अच्छा-खासा इनाम देंगे।

जासूस—बहुत अच्छा, जहाँपनाह ! (प्रस्थान)



अंक ३

दृश्य—१

स्थान—रणथंभोर—दरबार

हम्मीर—दूत अपने सेनापतिसे कहदो, चाहे सूर्य पश्चिमसे निकलने लगे, सुमेरू धरतीसे नीचा होजाए, और आकाश गिरपड़े, किन्तु हम्मीरका वाक्य नहीं टलसकता। जिन्हें मैंने शरण दीहै, मैं अपने प्राणोंकी वलि देकर भी उनकी रक्षा करूंगा। हिन्दु सर्वस्त्र देसकताहै किन्तु शरणार्थीको नहीं त्याग सकता। मैं मीरमुहम्मद और उसके परिवारको सुल्तानके हाथों नहीं सौंपसकता।

दूत—बहुत अच्छा, राजा साहब! सिपह सालारने यह भी कहा था कि अगर राजा साहबको यह शर्त कबूल न हो तो दूसरी शर्तें भी बादशाह सलामतसे मशवरा करके भेजीजा सकतीहैं। लेकिन जब तक सुलहकी बातचीत होतीरहे तब तक एक दूसरेकी फौज पर बिलकुल हमला न कियाजाए।

हम्मीर—जाकर अपने सेनानायकसे कहदो कि हिन्दुने केवल युद्धमें शत्रुपर प्रहारकरना सीखाहै, उसने शस्त्रहीन, आहत, रणसे विमुख या पराजित शत्रुपर शस्त्रउठाना नहीं सीखा। फिर वह सन्धिके प्रस्तावपर आक्रमण कैसे करेगा?

दूत—बहुत अच्छा, राजा साहब! (प्रस्थान)

बाण—सम्राट! आज अलाउद्दीनको सहसा सन्धिका प्रस्ताव करते देखकर मेरा हृदय शंकित होरहाहै। अस्तु शत्रु-शिविर में गुप्तचर भेजकर रहस्यका पता लगालेना आवश्यक है।

हम्मीर—गुप्तचर भेजनेकी आवश्यकता नहीं है बाण—! हिन्दु मृत्यु और विनाशको भी सन्मुख देखकर सत्य और धर्म के मार्गसे नहीं हटता। उसने सत्यकेनामपर समक्ष मरना सीखाहै छल-कपट से मारना नहीं।

बाण—सम्राट ! यदि प्रतिद्वन्दी भी सत्य पर प्राण देदेनेवाला और छल कपटका आश्रय न लेनेवाला हो तो उसी अवस्थामें यह धर्मनीति सफल होसकतीहै। छल-कपटसे प्रहारकरनेवाले आततायी यवनोंके दमन चक्रसे यदि हिन्दुजातिकी स्वतन्त्र सत्ताको जीवित रखनाहै तो उसे 'शठं शाठ्यं समाचरेत्' की नीतिको अपनाना ही होगा।

(द्वितीय दूतका प्रवेश)

दूत—राजा साहब ! बादशाह सलामतने कहला भेजाहै कि अगर राजा हम्मीर अपनी लड़कीको हमारे हरममें बेगम बनानेकेलिए पेश करे और चार लाख सानेकी मुहरें, और चालीस हाथी बतौर खिराज लेकर हमारी खिदमतमें हाजिर हो तो बादशाह सलामत सुलह करने ··· ··· ···

हम्मीर—बस,बस, दूत ! अगर तुम दूत न होते तो तुम्हारे मुंहसे इन शब्दोंके निकलनेसे पूर्व ही मैं तुम्हारी जिह्वाको उखाड़फेंकता और तुम्हारी खोपड़ीको धड़से उड़ाकर धूलमें मिलादेता। जाओ, अपने सुल्तानसे कहदो वह रणभूमिमें आकर मुझसे खिराज वसूलकरे।

बाण—उसने जितनी मोहरें, हाथी और घोड़े मांगेहैं उसे उतने ही खड्ग प्रहार दियेजाएंगे।

हम्मीर—उसे ललकारकर कहदो, अगर उसमें लेशमात्र भी पुरुषत्व है तो वह जहाँ छिपाहै, वहाँसे बाहर निकलकर मुझसे युद्ध करे।

दूत—बहुत अच्छा, ऐसा ही होगा। *(प्रस्थान)*

(नेपथ्यसे—'अल्ला हो अकबर' 'काफिरों को खतमकरो' 'औरतोंको छीनलो' का तुमुल-नाद, अग्निकाँड, धूम्र, हाहा-

कार, 'भागो' भागो, मुसल्मान आगए, मुसल्मान आगए, दुर्ग में चलो, दुर्ग में चलो' का तुमुलनाद।)

बाण---सम्राट ! ये सन्धिके प्रस्ताव सब छलकपट भरे ही रहे !

हम्मीर---अब पछताने या विवादकरनेका समय नहीं है. बाण ! महाबलाध्यक्ष ! तत्काल समस्त प्रजाको दुर्गमें एकत्रित होनेकी आज्ञा दो। सैनिकोंका दुर्गके प्रकोष्टपर पहरा लगादो और भोजनसामग्रीका पूर्ण प्रबन्ध करदेनेकेलिए भाण्डारीको कहदो।

(*गुप्तचरका प्रवेश*)

गुप्तचर---सम्राट! रणथंभोरके चारों ओर सौमील तक अलाउद्दीनकी सेना और लुटेरा दल फैलाहुआहै। सर्वत्र हिन्दुओं के घरोंपर अग्नि धधकरहीहै। उनकी करोड़ों रुपएकी सम्पत्ति यवनोंने लूटलीहै। उनकी बहू-बेटियोंके नग्न जलूस निकालकर यवन बलात्कार कररहेहैं। सैकड़ों हिन्दुओंको जीवित ही जला दियागयाहै। यवनोंकी वर्बरताकी सीमा नहीं रहीहै।

हम्मीर---अलाउद्दीन कहां है ?

गुप्तचर---अलाउद्दीन यवन सेनाके पार्श्वभागमें है। यवन सेनापति नुसरतखाँ अपने सैनिकोंके साथ दुर्गके इसी द्वार के सन्मुख छिद्र ढूंढताहुआ जारहाहै। वह देखिए।

हम्मीर---(नीचे देखकर) आज नुसरतखाँ मेरे बाणसे नहीं बचेगा (*बाणसे प्रहार करके नुसरतखांको मारडालताहै।*)

(*कई हिन्दु सैनिक दुर्गसे उतरकर यवनोंपर आक्रमण करते हैं। बहुतसे यवन मारेजातेहैं। यवन सेना भागउठतीहै। यवन*

सैनिकोंको लेकर उलूगखां और अलाउद्दीनका पुनः दुर्गके निकट प्रवेश। हिन्दु सैनिक झटपट दुर्गमें घुसजातेहैं।)

अलाउद्दीन—— काफिरोंको देखकर भागने वाले बुजदिलो! इस्लामके नामपर धब्बा न लगाओ। आगे बढ़ो, नहीं तो तुम्हें जिन्दा ही भून दियाजाएगा। उलूगखाँ! तुमको नुसरतखाँ की जगहपर सिपहसालार मुकर्रर कियाजाताहै। बहादुरीसे दुश्मनका मुकाबला करो।

उलूगखाँ—— जो हुक्म, जहाँपनाह!

अलाउद्दीन——(किलेपर दृष्टि डालकर) वह काफिरोंका सबसे मजबूत किला है इसपर इस्लामका झंडा गाड़ते ही सारा राजपूताना मेरे काबूमें आजाएगा। हमारे सिपहसालार नुसरतखांके मारेजानेकी खुशीमें इस किलेमें गानाबजाना और नाच होरहाहै। उलूगखाँ! देखा उस बदतमीज नाचनेवालेको? मेरी तरफ देखकर अगूंठा दिखाती है और झठ पीठ फेरलेतीहै। क्या यहाँ कोई ऐसा नहीं है जो उसे तीर मारकर गिरादे?

उलूगखाँ—जहाँपनाह! हमारे बहादुर सिपाही आगलगाने और लूटमारकरनेमें माहिर होतेहैं। तीर-कमान चलानेका हुनर हिंदुओंमें ही होताहै। हाँ, याद आगई। कल जो हिन्दू ऊधमसिंह कद कियागया है, सुनाहै वह आला तीरंदाज है। हुक्म हो तो उसे बुलालाऊं।

अलाउद्दीन—हाँ, फौरन लेआओ। (उलूगखाँका प्रस्थान) मेरे बहादुर सिपाहियो! किलेके चारों ओर घूमकर किलेमें घुसने की कोई तरकीब ढूंढनिकालो!

(उलूगखाँ और उधमसिंहका प्रवेश)

अलाउद्दीन—ऊधमसिंह सुना है कि तुम आला तीरंदाज हो

अगर तुम उस बदतमीज नाचनेवालीको तीरसे मारडालो तो तुम्हें आजाद करदियाजायगा।

ऊधमसिंह—बहुत अच्छा जहाँपनाह ! (तीरमारताहै, नर्तकी गिरपड़तीहै।)

(दुर्गके प्रकोष्टमें खलबली मचजातीहै। नीचे यवन सैनिक तालियां बजाकर नाचतेहैं।)

मीर मुहम्मद—औरतके कातिल बुजदिल अलाउद्दीनको मैं उसकी करनीका अभी मजा चखाताहूं, मेरे इस तीरके लगते ही वह जहन्नुममें पहुंचजाएगा। *(अलाउद्दीनपर लक्ष्य बनाताहै।)*

हम्मीर—(रोककर) मीर ! अलाउद्दीन मेरा शिकारहै। उसका बध मेरे ही हाथसे होगा। किन्तु क्या करूं इस समय उसने मेरी ओर पीठ फेरीहै। मैंने शत्रुका समक्ष बध करना सीखाहै पीठ पीछे से आक्रमणकरना नहीं। अगर तुम चाहो तो नर्तकीपर बाण मारने वाले उस हिन्दुका वध करसकतेहो।

बाण—शत्रुपर समक्ष या पीठ पीछे आक्रमण करनेमें कोई दोष नहीं है राजन् ! भगवान कृष्णने अर्जुनको भीष्म का बध करनेकेलिए पीठ पीछेसे ही आक्रमण करवायाथा।

म० मोहनदास—सम्राट ! असमक्ष आक्रमण करना महान पाप है।

मीर मुहम्मद—सम्राट ! अलाउद्दीन जिसप्रकार आपका दुश्मन है उसी प्रकार मेरा भी है। मगर आपका हुक्म नहीं टाल सकता। इस कातिलका शिर उड़ाताहूं। *(तीरसे ऊधमसिंहका शिर उड़ादेताहै। अलाउद्दीन और उसकी सेना भागपड़तीहै।)*

मीरमुहम्मद—सम्राट! बे अदबी मुश्राफ हो। अलाउद्दीनको खतमकरनेका निहायत आला मौका हाथसे निकलगयाहै।

(यवन दूतका प्रवेश)

यवन दूत—महाराज! बादशाह सलामत फौरन दिल्ली वापिस जानाचाहतेहैं। उन्होंने सुलहकापैगाम भेजाहै और कहाहै कि राजा साहिब रतिपालको भेजकर सुलहकी शर्तें तय करलें।

हम्मीर—जाकर अपने बादशाहसे कहदो कि रतिपाल आपके शिविरमें पहुंच जाएगा।

(दूतका प्रस्थान)

बाण—मुझे गुप्तचोरोंसे समाचार मिलाहै कि दिल्ली में हाजीमौलाने विद्रोह करदियाहै और नगरपर तथा शाहीकोष पर अधिकार करलियाहै। अनेकों खिलजी सैनिक विद्रोहीसे मिलगएहैं। इस समय शत्रुसे सन्धिकरनेका विचार त्यागकर पूर्णशक्तिसे उसपर आक्रमण करदेनाचाहिए। जिससे शत्रु हमारे पंजेमें फंसारहजाए और उधर दिल्ली पर कोई दूसरा अधिकार करले। फिर अलाउद्दीन राज्य खोजानेसे स्वय ही मरजायगा।

म० मोहनदास—नहीं जब शत्रु शंकटमें हो तो उसके साथ बैरकी भावना त्यागकर मित्रके समान उसकी सहायता करनी चाहिए। राज्य बनते और नष्ट होते ही रहतेहैं किन्तु धर्मनीति का त्यागकरना उचित नहीं, क्योंकि परलोकमें धर्मही साथ देताहै।

बाण—स्वामीजी! राज्य नष्ट होतेहैं, अन्धा होकर धर्मनीति का पल्ला पकड़नेसे। राज्य बनाने और चलाने केलिए धर्मनीति नहीं, राज्यनीतिकी आवश्यकता होतीहै। और इसलोकको

मिथ्या कहकर परलोकपर ही दृष्टि लगाए रहनेकेकारण आज हिन्दु जाति अपना सर्वस्व खोबैठीहै ! "जगन्मिथ्या" का प्रचार करनेवाले मूर्ख पण्डितो ! तुम्हारे थोथे सिद्धान्तोंने ही आज हिन्दु जातिको निष्कर्मण्य और जीवन संघर्षसे उदासीन बनादिया है ।

म० मोहनदास— कैसे ?

बाण—जब यह सशक्त हिन्दु जाति इस संसारको सत्य समझकर इसी लोकको स्वर्ग बनानेमें प्रयत्नशील रहतीथी तो इस जातिने विश्वके समस्त भू.भागोंपर एकछात्र राज्य स्थापित कियाथा । जबसे 'अहिंसा' का आवरण पहनाकर कायरताकी शिक्षा देनेवाले बुद्धने संसार को 'सर्व दु:खमय, कहना आरम्भकिया उसी दिनसे यह हिंदुजाति पुरुषत्व खोकर संसारसे, अपने शरीरसे और अपने अस्तित्वसे भी उदासीन बैठो है और इसने हाथपर हाथ रखेहुए यूनानी शक, शिथियन, हूण, यूची, अरब, तुर्क और मुगलोंको अपनी बहू-बेटियोंकी लज्जाका हरण करतेहुए, अपने देवालयोंको भस्मसान् करतेहुए, अपने साम्राज्य और स्वतन्त्रताको नष्ट करतेहुए और अपने लक्ष-लक्ष बालकोंका रुधिर बहातेहुए देखा । और सब कुछ देख-सुनकर भी अपने नेत्रों और कानोंको मूंदकर इस जातिने कहा—'यह सब मिथ्या है, सब असत्य है, जब तक हिन्दुजाति 'जगन्मिथ्या' के अहिफेनके मदमें मस्तहै तबतक इसे इसी प्रकार पददलित त्रस्त और नष्ट होनापड़ेगा ।

म० मोहनदास—बाण ! अभी तुम युवक हो । तुम नहीं समझते "यतो धर्मस्ततो जय:" ।

बाण—"यतो धर्मस्ततो जय": कभी सत्य होतारहाहोगा, महात्माजी ! आज तो इस कलियुगमें यतो धर्म स्ततो क्षय: ही

होरहाहै। हमारे गृहोंपर अग्नि धधकानेवाले, हमारी बहू-बेटियों पर बलात्कार करनेवाले, हमारे बच्चोंका अन्यायपूर्वक रुधिर बहानेवाले पापी यवनोंके सन्मुख धर्म-कर्ममें लीन, च्यूंटीकी हत्या से भी घबरानेवाली भोल-भाली हिन्दुजातिकी शताब्दियोंसे जो पराजय और दुर्गति होरहीहै उसे देखकर भी आप कहतेहैं— यतो धर्मस्ततो जयः!

म० मोहनदास—शास्त्र-वचन असत्य नहीं होता, चारण-कुमार!

बाण—होता है या नहीं, यहतो मैं नहीं जानता, महात्मा-जी! किन्तु इतना जानताहूं कि आज जब अलाउद्दीनके विरुद्ध उसके साम्राज्यमें प्रबल विद्रोह उठखड़ाहुआहै और उसकी राजधानी दिल्लीपर उसके शत्रुने अधिकार जमालिया है, उस समय शत्रुपर पूरे बलसे आक्रमण करने से हिन्दुस्थानको दासता पाश से मुक्त कियाजासकताहै। यदि आज आपलोगोंने धर्म-नीति के भरोसे रहकर इस स्वर्ण अवसरको चुकादिया तो हिंदु-स्थान को स्वतन्त्र करनेका, तथा हिन्दुजातिके उत्थानका अवसर फिर कभी न आसकेगा। जो जाति सन्मुख उपस्थित सुअवसर को नहीं पहचानती, या पहचानकर भी उससे लाभ नहीं उठाती, उसका भविष्य कभी उज्वल नहीं बनसकता।

—पट—

दृश्य—२

स्थान—अलाउद्दीनका शिविर

(अलाउद्दीन उलूगखां और हुसैना)

उलूगखाँ—जहाँपनाह! दिल्लीसे खबर मिलीहै कि हाजी-मौलाका विद्रोह बुरी तरह कुचलदियागयाहै और विद्रोहियोंको

इतनी सख्त सजा दीगईहै कि आज सुलतान सलामतके नामसे दुनिया थर्रातीहै ! यह भी खबर मिली है कि नया महल तैय्यार होगयाहै। मगर मालिक अलाउलमुल्कने फरमायाहै कि नए महलकी तामीरी रश्म पूरा करनेकेलिए इन्सानके खूनकी जरूरत है। अगर इन्सानका खून उस इमारतमें छिड़का जाए तो उसके वासिन्दोंकी जिन्दगी रुतवा और दौलतमें बड़ा इजाफा होगा।

अलाउद्दीन—मालिक अलाउलमुल्कको फौरन पैगाम भेज दो कि अलाउद्दीनके रहतेहुए इनसानके खूनकी क्या कमी है। चाहो तो इनसानके खूनकी नदियाँ बहाई जासकतीहैं। दिल्लीके कोतवालको हुक्म देदो कि बस्ती के बाहर जो आवादीहै उसमें तीस हजार मोटे मुस्तण्डोंको पकड़कर उनके खूनसे तमाम कमरों और उनकी दीवारोंकी लिपाई करदो।

उलुगखां—जो हुक्म, जहांपनाह! (प्रस्थान)

(द्वारपालका प्रवेश)

द्वारपाल—जहाँपनाह, ! राजा हम्मीरसे सुलहका पैगाम लेकर रतिपाल बादशाह सलामतकी खिदमतमें आयाहै, हुक्म हो तो हाजिर करूं।

अलाउद्दीन—हां, निहायत अदबके साथ लेआओ।

(द्वारपालका प्रस्थान)

अलाउद्दीन—हुसैना! आज फिर तुम्हारा इम्तहान है। रतिपाल काफी दिनसे हमारे साथ मिलाहुआहै और हमको हम्मीर की खुफिया कमजोरियां बतलातारहाहै मगर काफिरोंके दिल का कुछ पता नहीं चलता। आज तुमने उस पर अपने हुसन का जादू फेरनाहै।

हुसैना---भैया जान! हुसैनाकेलिए जब जब जहांपनाह ने जो खिदमत करनेका हुक्म दियाहै उसको हुसैनाने हमेशा सरअन्जाम दियाहै।

(द्वारपालके साथ रतिपालका प्रवेश)

द्वारपाल--जहांपनाह! रतिपाल हाजिर है। (प्रस्थान)

अलाउद्दीन---(उठकर) आओ राजा रतिपाल! बहुत दिन से तुमसे मिलनेकी ख्वाइश थी। वह आज पूरी हुई। आओ बैठो। (बिठाता है।) हुसैना! राजा रतिपालकेलिए जो तोफा रखाहै, वह लेआओ और राजा रतिपालको अपने हाथसे पहनाओ।

हुसैना—बहुत अच्छा जहाँपनाह! राजा रतिपाल जी! लीजिए यह हीरोंका हार (हार पहनाती है), यह रत्नोंसे जड़ीहुई अगूंठी और यह मोतियोंका कंठा। यह सब बादशाह सलामतकी तरफ से आपको बतौर तोफा दिएजातेहैं।

रतिपाल—बादशाह सलामत! मैं आपका तुच्छ सेवक हूँ। आपके अनुग्रहका ऋण नहीं चुकासकता।

अलाउद्दीन--राजा रतिपाल! अब तक अलाउद्दीनने दर्जनों किले फतह कियेहैं। सिर्फ यह रणथंभोरका किला तुम्हारी बहादुरीकी वजहसे मेरे हाथ नहीं आसकाहै। भोज और प्रीतम ने मुझे बतलायाथा कि 'हम्मीर की सल्तनत सिर्फ राजा रतिपाल के आसरेपर है। उस जैसा काबिल आदमी तमाम हिंदुस्तान में नहीं'।

रतिपाल---मैं बादशाह सलामतका तुच्छ सेवक हूँ।

अलाउद्दीन--राजा रतिपाल! मैं रणथंभोरको सिर्फ मशहूरी की खातिर जीतनाचाहताहूँ, सिर्फ मशहूरीकी खातिर। इस किले

को फतहकरनेके बाद मैं इसे आप-जैसा अपने मेहरबान दोस्तके हवाले करदेनाचाहताहूँ। मेरी ख्वाइश हरगिज रणथभोरको अपनी सल्तनतमें मिलानेकी नहीं है। कहो, मेरी क्या इमदाद करसकते हो ?

रतिपाल—मैं बादशाह सलामतका तुच्छ सेवक हूँ।

अलाउद्दीन—हुसैना ! राजा रतिपालकेलिए नाश्ता लाओ, मैं जरा बाहर जाताहूँ। *(प्रस्थान)*

हुसैना—बहुत अच्छा जहाँपनाह ! *(प्रस्थान)*

रतिपाल—कितना उदार है, यह सम्राट ! कितनी सुन्दर है यह युवती ! साक्षात् अप्सरा है। यदि मैं रणथंभोरका सिंहासन प्राप्त करलेता तो इसे अपनी… … … —

(मदिरा और फल लेकर हुसैनाका प्रवेश)

हुसैना—राजा साहब ! मेरे नाचीज हाथोंसे एक प्याला अंगूरी मंजूर फरमावें। आह, राजा साहब ! आप कितने बहादुर और कितने खूबसूरत हैं।

रतिपाल—*(प्याला ग्रहण करके)* हुशैना ? हुसैना ? तुम्हारी एक दृष्टि पर ही रतिपाल मुग्ध है। वह तुम्हारा है जो आज्ञा दो स्वीकार है। तुम केवल मेरे सन्मुख बैठ जाओ जिससे मैं जी भर कर तुम्हें देखलूं। *(हुसैना रतिपालके गलेमें एक हाथ डालकर दूसरे हाथ से मदिरा पिलानी है)*

हुसैना—राजा साहब। जब आप रणथंभोर के राजा होंगे तो उस वक्त भी इस नाचीज हुशैनाको याद रखेंगे ?

रतिपाल—तुम्हें याद ? तुम्हें मैं मरकर भी भूल नहीं सकता।

(अन्दर के द्वार पर खटखटाहट ! हुसैना अलग जा बैठती है। अलाउद्दीन का प्रवेश)

अलाउद्दीन—राजा साहब ! फिर ?

रतिपाल—मैं बादशाह सलामतका तुच्छ सेवक हूँ। मुझे आप जो आज्ञा देंगे मैं पालन करूंगा।

अलाउद्दीन—सिर्फ मेरी एक इमदाद करदो। हम्मीरके सिपहसालारोंमें फूट डालदो, बस। करोगे ?

रतिपाल—(खड्ग उठाकर) इसकी सौगन्ध है जहाँपनाह ! करूँगा, अवश्य करूंगा।

अलाउद्दीन—बहुत अच्छा, राजा साहब ! हुसैना ! जाओ राजा साहब को दरवाजे तक छोड़ आओ।

(हुसैना और रतिपाल एक दूसरेको प्यासी दृष्टिसे देखतेहुए जाते हैं। रतिपालका प्रस्थान। हुसैना सन्मुख आतीहै !)

अलाउद्दीन—हुसैना ! तुमने अच्छा पार्ट अदाकिया। मैं दीवारके छेदसे सब कुछ देखरहाथा। हिन्दुस्तानके कोने-कोने में अपनी सल्तनतको फैलानेकेलिए हमारे पास एक ही तदबीर है, हिन्दुओंमें फूट पैदाकरदेना; सिर्फ तलवारकी ताकतपर हिन्दुओंको जीतना बिलकुल नामुमकिन है।

(भोजका प्रवेश)

भोज—बादशाह सलामत ! रणथंभोरके चारों ओर सौ मीलकी दूरी तक समस्त खेतीको नष्ट करदियागयाहै। निकटके गावोंमें अग्नि धधकरहीहै। हम्मीरके पास एक दाना अन्न भी बाहरसे नहीं पहुंचसकता। हम्मीरके अन्नभण्डारीके पास जहाँपनाहकी दीहुई स्वर्ण मुद्राएं भिजवादीहैं। उसने आज रात्रिको हम्मीरके समस्त अन्नकोषपर अग्नि धधकादेनेका वचन दियाहै। अन्नके सर्वथा अभाव होजानेके कारण कल या परसों रणथंभोर दुर्ग बादशाह सलामतके हाथमें होगा।

अलाउद्दीन—बादशाह सलामतके हाथमें नहीं, राजा भोजके हाथमें। राजा साहब! आपकी कुर्बानी, नेकनियती और मेहनत का आखिर अच्छा नतीजा मिलेगा ही। अब आप जाकर आराम करें।

भोज—बहुत अच्छा, जहाँपनाह! (प्रस्थान)

हुशैना—देखा इस बेवकूफ को। अपने सगे भाईकी सल्तनत को खतम करानेकेलिए कितने दिलोजानसे काम कररहाहै! अगर इतनी दिलोजानसे अपने भाईकी इमदाद करता तो आज कोई दूसरा ही नजारा होता। आज जो सारे हिन्दुस्तानमें हिन्दुओं की तबाई होरहीहै, लाखों हिन्दुओंको बेदरदीसे कतल कियाजा रहाहै, लाखो हिन्दु औरतोंको जबरदस्ती बेइज्जत कियाजारहाहै। और हिन्दु-कौमको हमेशाकेलिए गुलाम बनायाजारहाहै वह सब ऐसे ही कौमी गद्दारोंकी मददसे। आनेवाले जमानेमें हिन्दु कौमके बच्चे ऐसे भोज-जैसे गद्दारोंके नामपर नफरतसे थूकेंगे। भैय्या जान! आपभी—

अलाउद्दीन—अगर हिन्दुकौमके लाड़ले यह सब समझ लेते और अपनी कौमके गद्दारोंको पहचानलेते तो हुसैना! न अलाउद्दीन दिल्लीके तख़्तपर होता और न हुशैना हिन्दुगद्दारों पर अपने हुश्नका जादू चढ़ाती।

(हंसते हुए दोनोंका प्रस्थान)

दृश्य—३

स्थान-रणथंभोर दुर्ग

(प्रहरीके रूपमें रणमल्ल और रतिपाल)

रणमल्ल—मेरे ऊपर शंकाकी दृष्टि ? असम्भव ! रतिपाल ! यह तुमने किससे सुना ?

रतिपाल—मैंने स्वयं सम्राटके मुखसे सुनाहै कि रणमल्ल अपना कार्य सावधानीसे नहीं कररहाहै । और शत्रुसे मिलनेकी बाट देखरहाहै ।

रणमल्ल—रणमल्ल यमराजसे मिलसकताहै, शत्रुसे नहीं ।

रतिपाल—मैं भी यही सोचताथा किन्तु रणमल्ल हम्मीरके शिरपर मृत्यु नाचरहीहै । इसीसे ,वह अपने हितैषियोंको भी अपना शत्रु समझरहाहै । उसके इसी दुर्व्यवहारसे उसके सगे भाई भोज और प्रीतमको अलाउद्दीनकी शरणमें जानापड़ाहै ।

रणमल्ल—भोज और प्रीतमका अलाउद्दीनकी शरणमें जानेका प्रधान कारण यह है कि हम्मीर अपने हिन्दु सामन्तों और सेनानायकोंसे कुछ और व्यवहार करताहै और मुसलमान मीर मुहम्मदसे कुछ और ।

रतिपाल—रणमल्ल मैंने और तुमने हम्मीरके साम्राज्यको बनाने केलिये अपना रुधिर बहायाहै किन्तु आज मीर मुहम्मद ही हम्मीरका दाहिना हाथ बना हुआ है । हम्मीर यह नहीं सोचता कि जिस मीर मुहम्मदने अपने स्वधर्मी स्वदेशी बादशाह अला-उद्दीनसे धोकाकियाहै वह विधर्मी हम्मीरका साथ कब तक देगा ?

रणमल्ल—अपने भाईयोंका तिरस्कार करके जो विधर्मी, विदेशियोंका आदर करता है, उसका पतन निश्चित है ।

रतिपाल—इसीसे तो रणमल्ल ! मैं शीघ्र अलाउद्दीनकी शरणमें जारहाहूँ ।

रणमल्ल—तो मैं कब पीछे रहूँगा । मैं तुमसे पहले ही चलाजाऊंगा । यदि हम्मीर अपनी मूर्खतासे विनाशकी ओर जारहाहै तो हम क्यों न अपने हितका मार्ग ग्रहणकरें ?

रतिपाल—अच्छा सुअवसर पातेही दुर्गसे उतरकर खिलजी-शिविरमें चले जाना ।

रणमल्ल—बहुत अच्छा । अब द्वितीय भेंट अलाउद्दीनके शिविरमें ही होगी । (*दुर्गसे उतरनेलगताहै ।*)

(*हम्मीरका प्रवेश*)

हम्मीर—यह दुर्ग से कौन उतररहाहै ?

रतिपाल—सम्राट ! यह देशद्रोही रणमल्ल है जो अपनी मातृभूमि और हिन्दुजातिके शत्रु अलाउद्दीनसे मिलनेजारहाहै ।

हम्मीर—रणमल्ल जैसा देशभक्त भी शत्रुसे मिलने चलाहै ? रणमल्ल ! रणमल्ल !!

रतिपाल—सम्राट ! मैंने उस कृतघ्नको बहुत समझाया, किन्तु उसने एक न सुनी और दुर्गसे उतर ही गया ।

(*रणमल्ल शीघ्रतासे दुर्गसे उतरकर मुसलमान शिविरकी ओर जाताहै ।*) (नेपथ्यमें कोलाहल— अग्निकी लपटें, । 'पानी !' 'पानी !' ('अन्न 'भंडार भस्म हो गया,) 'पानी !' 'पानी !' का तुमुल नाद)

(*बाणका प्रवेश*)

बाण—सम्राट ! सहसा अन्न-भंडारपर अग्नि धधकउठीहै । वस्त्रागार और शस्त्रालय भस्मसात् होनेवालेहैं । दुर्गमें जलका अभाव है अस्तु अग्नि बुझाना कठिन है ।

हम्मीर—भांडारी कहां है ?

(*वीरमका प्रवेश*)

वीरम—भांडारी विद्रोह करके शत्रुसे मिलगयाहै, सम्राट! सम्पूर्ण अन्नभांडार जलकर भस्म होचुकाहै। वस्त्रागार और शस्त्रालय पर प्रचंड अग्नि धधकरहीहै। देखिए अग्निकी लपटें इधरको ही बढ़रहीहैं। दुर्गमें देशद्रोहियोंका अड्डा बनाहुआहै। रणमल्ल शत्रुसे जामिलाहै। देखिए, देखिए, हमारे कुछ विद्रोही सैनिक दुर्गसे उतररहेहैं।

रतिपाल—देशद्रोहियो! ठहरो, ठहरो। कहाँ जातेहो? कृतघ्नो! तनिक ठहरो। रतिपालके खड्गकी प्रतीक्षा करो। मातृ-भूमिके शत्रु अलाउद्दीनसे मिलनेवाले विद्रोही सैनिको! ठहरो।

(भागकर दुर्गसे उतरजाताहै।)

वीरम—सम्राट! रतिपाल भी चलागया।

हम्मीर—भोज, रणमल्ल, भांडारी, रतिपाल, सब विद्रोही बनकर शत्रुसे जामिलेहैं। अन्नकोश, वस्त्रागार और शस्त्रालय सब भस्म होचुकेहैं, अब रणथंभोरका पतन निश्चित है।

(मीरमुहम्मदका प्रवेश)

मीरमुहम्मद—सम्राट! किलेमें धोकेबाज देशद्रोहियोंकी चालें कामयाब होगईहैं। मुमकिन है कि कोई देशद्रोही किसी भी वक्त किलेका दरवाजा दुश्मनकेलिए खोलदे।

हम्मीर—मीर मुहम्मद अब ऐसा समय आगयाहै जब मैं तुम लोगोंकी रक्षा नहीं करसकता। अब दुर्ग सुरक्षित नहीं है। हमलोग अब जौहर आरम्भ करेंगे। तुम बतलाओ, तुम्हें और तुम्हारे परिवारको कहाँ भेजदियाजाए?

मीरमुहम्मद—सम्राट! मैं और मेरा कुनबा जहाँ जानाचाहेंगे खुदही चलेजाएंगे। अगर सम्राट इजाजत दें तो मेरीऔरत और बच्चा आखरीबार आपके दर्शनकरलें।

हम्मीर—मुझे कोई आपत्ति नहीं। (*मीरमुहम्मदका प्रस्थान*) बाण! जाओ, महारानीसे जाकर कहो कि समस्त नारियाँ जौहरकेलिए प्रस्तुत होजाएं।

बाण—जो आज्ञा, सम्राट! (*प्रस्थान*)

हम्मीर—वीरम! इस समय दुर्गमें कुल मिलाकर कितने स्त्री पुरुष होंगे?

वीरम—सम्राट! सायंकालको भांडारीने भोजन देतेसमय लगभग पचीस सहस्र पुरुषों, बीस सहस्र स्त्रियों और तीस सहस्र बच्चोंकी गणना कीथी। किन्तु आज एक मनुष्यकेलिए भी भोजन नहीं है।

(*शिविका में रुधिरसे लथपथ स्त्री-बच्चेको लेकर मीरमुहम्मदका प्रवेश*)

हम्मीर—यह क्या किया? यह क्या किया? मीर! मीर! मीर! तुमने यह क्या किया? अपनी स्त्री और एकलौते पुत्रकी हत्या क्यों की?

मीरमुहम्मद—सम्राट! मैंने इन्हें कतल कियाहै यह साबित करनेकेलिये कि मैं मुसलमान तो हूँ, मगर भोज रणमल्ल, रतिपाल या भाण्डारीकी तरह गद्दार, नमकहराम और देशद्रोही नहीं हूँ। मैंने आपका नमक खायाहै, मैं आखरी दमतक आपका साथ दूंगा।

नूरजहां—(आंखें खोलकर) मेहरबान, गरीबनिवाज, सम्राट! अल्ला ताला आपको ··· (*मृत्यु*)

हम्मीर—मीरमुहम्मद! तुमने अपने इस महान त्यागसे सिद्धकरदियाहै कि मुसलमानके हृदयमें भी उतनी ही देशभक्ति हो सकतीहै जितनी किसी हिन्दुके हृदयमें। हमारे भाइयों और

सेनानायकोंने स्वधर्मी होकर भी मुझसे धोकाकिया किन्तु तुमने विधर्मी होकरभी हमारा साथ दियाहै ।

(बाणका प्रवेश)

बाण—सम्राट, जौहरकी तैय्यारी कीजाचुकीहै । सतियां इसी मार्गसे महाश्मशानको प्रस्थान करेंगी ।

(महाराणी दुर्गावतीके साथ माया एवं नगरनारियों और बच्चोंका प्रवेश ।)

बाण—(गाताहै ।)

भूल न जाना भावी भारत ! दारुण करुण कहानी ।
भूके रज-कण-कणसे सुनना आरत हिन्दू-वाणी ।। मूल० ।।
कोटि-कोटि हिन्दू-जन रजमें हा ! मिलगए सिसककर,
भारत-भूपर यवन-जनोंके दमन-चक्रसे पिसकर ॥
अग्नि-अंकमें कूदे कितने, सरिता-ज़लमें कितने,
मरे, यवन-करसे बचने को, विषखा पलमें, कितने ।।
देश-धर्म-हित कटे करोड़ों वीर पुरुष रण-मानी ।। मूल० ।।
भूल न जाना लक्ष-लक्ष शिशु मातृ-अङ्कसे छीने,
विद्धकिए, मांके सन्मुख, भालोंसे उनके सीने ।
जीवित शिशु तल तप्त तैलमें मांके मुखमें डाले,
शिशुका रुधिर पोतकर माँके केश रक्त करडाले ।
अत्याचार सुमिर यवनोंके कम्पित होती वाणी ।। मूल० ।।
नग्न नारियोंके जलूस लखकर दिनपति शरमाया,

पापी यवन गणोंका मन हा ! तनिक नहीं सकुचाया ।
एक एक अवलाका सौने हा ! सतीत्व हरडाला,
डाल गलेमें यवन नाचते नारि-उरुजकी माला।
हिन्दु नारिकी विषम दुर्दशा जाती नहीं बखानी ॥ मूल० ॥
खड्ग उठाकर हिन्दुजनोंने करुणा दूर भगाई,
अपने करसे पुत्र-पुत्रियां, भगिनी-नारि मिटाई ॥
भस्म भले होजाएं कुसुम-तन, यवन न छूने पावे,
जीवित रहते नहीं सिंहनी-पति जम्बुक कहलावे ॥
चली आज जौहर रचने दुर्गा-सी दुर्गा रानी ॥
भूल न जाना भावी भारत दारुण करुण कहानी ।
भूके रज-कण-कणसे सुनना आरत हिन्दू-बाणी ॥

(महारानी दुर्गावती नारियों बालकों का प्रस्थान)

हम्मीर—दुर्गके द्वार खोलदो । वीरो ! इन देवियों औरबच्चों ने अपने सतीत्व, स्वतंत्रता और धर्मरक्षाकेलिए अपने कुसुम शरीरोंको जीवित ही चितामें भस्मकरके हिन्दुपुरुषोंको धर्म और देशकीरक्षाकेलिए हंसते-हंसते जीवन उत्सर्ग करनेका मार्ग दिखा दिया ! आओ अन्तिम वार शत्रुको और समस्त संसारको यह दिखलादें कि हिन्दु पुरुष कि प्रकार वीर गतिको प्राप्तहोतेहैं ।

(द्वार खोलदिएजातेहैं। अल्ला हो अकबर' 'या अली या अली' काफिरों को खतम करो औरतोंको छीनलोका तुमुलनाद

करतेहुए यवनोंका दुर्गमें प्रवेश। हिन्दु हर हर महादेवका नारा लगातेहुए आक्रमण करते हैं। सहस्त्रों यवन मारेजाते हैं, शेषभाग खड़ेहोतेहैं)

(अलाउद्दीन और उगलूखांका प्रवेश)

अलाउद्दीन—अब, जब कि किला फतह होचुका है, बुजदिलो! तुम काफिरोंसे डरकर भागतेहो? देखा कमबख्तोंकी पीठपर ही हिन्दुओंकी तलवारोंके घाव लगेहैं। भगोड़ो! आगे बढ़ो।

(यवन सैनक 'अल्लाहो अकबर' का नाद करके पुनः प्रहार करतेहैं।)

उलूगखां—जहाँपनाह! वह देखिए वह हम्मीर है, उसकी दहानी ओर बीरम है।

अलाउद्दीन—हमारे बहादुर सिपाहियो! हम्मीरको जिन्दा पकड़लो। इसकी जिन्दा खाल उतारकर हम दिल्ली लेजाएंगे।

हम्मीर—(आगे बढ़कर) उलूगखांपर प्रहार करताहै। वह घायल होकर गिरपड़ताहै) अलाउद्दीन! ठहरो ठहरो! इस खड्गको अपनी प्यास बुझानेदो। (अलाउद्दीनको यवन सैनिक घेरलेतेहैं। बीरम और मीरमुहम्मद घायल होकर गिरपड़तेहैं। बाण और हम्मीर एकदूसरेका वध करडालतेहै।)

य० सैनिक—जहांपनाह! राजा हम्मीर मारागयाहै, उसका

साथी बाण और भाई बीरम भी मौतके घाट उतरचुकेहैं। यह गद्दार मीर मुहम्मद घायल होकर पड़ाहै।

अलाउद्दीन—मीर मुहम्मद ! तुमने हमसेमु दगाकरके काफिर हम्मीरका साथ दियाहै। मगर अगर तुम अपनी गलती पर अफसोस करके मुआफी मांगलो तो तुम्हें जिन्दगी बखशदी जाएगी।

मीरमुहम्मद—जो कुछ मैंने कियाहै, सुल्तान ! उसपर मुझे रत्ती भर अफसोस नहीं है। और अगर मुझे जिन्दगी बखश दीजाए तो मैं अलाउद्दीनको कत्ल करके हम्मीरके पुत्रको रणथंभोरकी गद्दीपर बिठाऊंगा।

अलाउद्दीन—कतल करनेवालेका बच्चा ! सिपहसालार ! इस कम्बख्त, बदजबान, गद्दार, मीर मुहम्मदको हाथीके पैरोंके तले डालकर कुचलवादो।

उलूगखां—जो हुक्म जहांपनाह। (सबका प्रस्थान)

(रतिपालका प्रवेश)

रतिपाल—रणथंभोर आज नष्ट-भ्रष्ट, श्रीहीन श्मशान है। रतिपाल ! तुम्हारे देशद्रोह, धर्मद्रोह और जातिद्रोहकी कथा हिन्दुस्थानमें सदा अमर रहेगी। लाखों हिन्दुओंका रुधिर बहानेमें तुमने सहायता की, लाखों हिन्दु स्त्रियोंके सौभाग्य और सतीत्वको यवनों से नष्टकरवानेमें तुमने सहयोग दिया तथा हिन्दु जातिके लाखों-करोड़ों रुपएकी सम्पतिको लुटवानेमें तुमने

साथ दिया! किस लिए? केवल इसलिए कि रणथंभोरका सिंहासन तुम्हें प्राप्त हो और हुसैनाके कोमल बाहुपाशकी कंठमें डालकर तुम उस स्वर्णासन पर आरूढ़ होकर स्वर्गीय सुखका अनुभव करो। क्यों? इसीलिए न?

(सहसा काजीके साथ अलाउद्दीनका प्रवेश)

अलाउद्दीन—नहीं, इसलिए। *(खड्गसे रतिपालका शिर उड़ा देताहै।)* जन्मभर अपने मालिक राणा हम्मीरका नमक खाकर आखीर वक्तमें उसको धोकादेनेवाले काफिरोंको यही सजा मिलनीचाहिए। काजी साहब! काफिरों केलिए क्या फतवा है?

काजी—जहांपनाह! ये काफिर खिराजगुजार हैं। जिस वक्त मुहासिल इन लोगोंसे चांदीके सिक्के तलब करें, इनका फर्ज है कि निहायत अदबके साथ सोनेके सिक्के पेशकरें। अगर मुहासिल पान खाकर किसी खिराजगुराजके मुंहमें पीक थूकनाचाहे तो उसे फौरन अपना मुंह खोलकर खड़ाहोजाना चाहिए। जो कुछ भी दौलत खिराजगुजारके पास है उसके मालिक मुसलमान हैं। जो खिराजगुराज जरा भी आनाकानी करताहै उसकी सजा मौत है।

अलाउद्दीन—मैं खिराजगु जार काफिर हिन्दुओंको इससे भी सख्त सजादूंगा। जोकुछ उन्होंने हजारों सालोंसे कमाकर

जोड़ रखा है वह सब उनसे छीनकर उनको लकड़हारा और भिस्ती बनादूंगा और उनकी बहू-बेटियोंको मुसलमानोंकी लौंडियोंमें तबदील करदूंगा। हिन्दुओंपर ऐसी तबाही ढाऊंगा कि उनमेसे किसीको भी सवारीकेलिए घोड़ा, पहननेकेलिए अच्छे कपड़े और हथियार, खानेकेलिए पानतक नसीब न होगा। मेरी गर्जना सुनते ही लाखों हिन्दु चूहोंकी तरह बिलमें घुसजाएंगे और उनकी औरतें, बहनें और लड़कियां भूखके मारे खुदही मुसलमानोंके घरोंमें आकर लौंडियां बनगी।

(काजीकेसाथ प्रस्थान)



सम्मतियां



"मेरा आशीर्वाद —मदन मोहन मालवीय

"आपके उत्साहके लिए बधाई। ऐसे साहित्यसे हिन्दु जातिका कल्याण होगा" —डा०ईश्वरीप्रसाद एम.ए.,डी.लिट्
इतिहास-अध्यापक, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

"राष्ट्रके पुनरुत्थानकेलिए आप जिस उत्कृष्ट साहित्यकी सृष्टि कररहेहैं, उसकी आज अत्यधिक आवश्यकता है।"
—प्रो. गोविन्दराम एम.ए.एम. ओ. एल., शास्त्री,
हिन्दु कालेज, दिल्ली।

"मध्यकालीन हिन्दुस्थानके इतिहासमें आपकी इतनी रुचि देखकर प्रसन्नता हुई।" - प्रो. गोमतीप्रसाद एम.ए.
प्रिंसिपल राजकीय कालेज, धर्मशाला।

"आपकी ऐतिहासिक नाटक-निर्माणकी नई योजना परम सराहनीय है। मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि आपने राजस्थानी इतिहाससे संबंधित कई नाटकोंका निर्माण कर लियाहै।" —पुरुषोत्तम मेनारिया एम.ए., साहित्यरत्न,
मंत्री,महाराणा भूपाल प्राचीन साहित्य शोध संस्थान
उदयपुर।

"आप नम्रतापूर्वक सरस्वतीके मंदिरमे प्रविष्ट होरहेहैं, यह मुझे अच्छा लगा। मैं जानकी-जीवनसे आपकी सफलताकी कामना करताहूँ। —"सियाराम शरण गुप्त,
चिरगाँव, झाँसी।